ISSN 2454 - 5163

प्रकाशन तिथि : 26 फरवरी 2016, मूल्य 2 रुपये, वर्ष 34, अंक 8, कुल पृष्ठ 36

वीतराग-विज्ञान

(पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट का मुखपत्र)

सम्पादक :
डॉ. हुकमचंद भारिल्ल

दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र अहारजी–टीकमगढ (म.प्र.)

वीतराग-विज्ञान (392)

हिन्दी, मराठी व कन्नड़ भाषा में प्रकाशित

जैनसमाज का सर्वाधिक बिक्रीवाला आध्यात्मिक मासिक

सम्पादक :

डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल

सह-सम्पादक :

डॉ. संजीवकुमार गोधा

प्रकाशक एवं मुद्रक :

ब्र. यशपाल जैन द्वारा पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट के लिये जयपुर प्रिण्टर्स प्रा. लि., जयपुर से मुद्रित एवं प्रकाशित।

सम्पर्क-सूत्र :

पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट

ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015

फोन :(0141)2705581, 2707458

E-mail : ptstjaipur@yahoo.com

ISSN 2454 - 5163

शुल्क :

आजीवन	:	251 रुपये
वार्षिक	:	25 रुपये
एक प्रति	:	2 रुपये

मुद्रण संख्या :

हिन्दी	:	7200
मराठी	:	2000
कन्नड़	:	1000
कुल	:	**10200**

आत्मदेव ही सच्चा तीर्थ है

हे जीव ! तू ही तेरा तीर्थ है, वहीं स्थिरता कर, दूसरे तीर्थों में न जा न जा ! व्यवहार निषेध्य है न ! इसलिये यहाँ योगीन्द्रदेव स्पष्ट करते हैं कि सम्मेदशिखर आदि तीर्थ तो पर तीर्थ हैं, वहाँ न जा ! उसके लक्ष्य से तुझे शुभराग होगा। तू अपने परम तीर्थस्वरूप आत्मा में आरूढ हो। उससे तुझे निर्विकल्प आनन्द का अनुभव होगा। अन्य गुरु की सेवा न कर, उसके लक्ष्य से तुझे राग होगा। तू अपने परमार्थ गुरु की सेवा कर उसी से तुझे आनन्द की प्राप्ति होगी। देव की सेवा कर, अन्य देव अरिहंत, सिद्ध का ध्यान न कर। भाई उनके लक्ष्य से शुभ विकल्प तथा पुण्य बँधन होगा। तू अपने आत्मदेव का ध्यान कर, जिससे तुझे आनन्द के नाथ की भेंट होगी। तू अपने परम देव-गुरु और तीर्थ के समीप जा। ऐसा कहकर राग के कारणभूत व्यवहार देव-गुरु-तीर्थ का लक्ष्य छुड़ाकर आनन्द के कारणभूत परमार्थ देव-गुरु-तीर्थ का लक्ष्य कराया है। 348

– द्रव्यदृष्टि जिनेश्वर, पृष्ठ 79

वीतराग-विज्ञान

वीतराग-विज्ञान ही, तीन लोक में सार।
वीतराग-विज्ञान का , घर-घर होय प्रसार।।

वर्ष : 34 (वीर नि. संवत् - 2542) 392 अंक : 8

धनि-धनि ते मुनि...

धनि-धनि ते मुनि गिरिवनवासी।।टेक।।
मार-मार जग जार जार तें, द्वादस व्रत तप अभ्यासी।।
धनि-धनि ते मुनि...।।1।।
कौड़ी लाल पास नहिं जाके, जिन छेदी आसापासी।
आतम-आतम पर-पर जानै, द्वादश तीन प्रकृति नासी।।
धनि-धनि ते मुनि...।।2।।
जा दु:ख देख दु:खी सब जग ह्वै,सो दु:ख लख सुख ह्वै तासी।
जाकों सब जग सुख मानत है, सो सुख जान्यो दु:खरासी।।
धनि-धनि ते मुनि...।।3।।
बाहिज भेष कहत अन्तर गुण, सत्य मधुर हित मित भासी।
'द्यानत' ते शिवपंथ पथिक हैं, पांव परत पातक जासी।।
धनि-धनि ते मुनि...।।4।।

– कविवर पण्डित द्यानतरायजी

सम्पादकीय

तत्त्वार्थमणिप्रदीप

(आचार्य उमास्वामी कृत तत्त्वार्थसूत्र की टीका)

(गतांक से आगे....)

(२१) अज्ञान – यदि कोई तिरस्कार करे, कहे कि तू अज्ञानी है, कुछ जानता नहीं है तो उससे भी खिन्न न होकर ज्ञान की प्राप्ति का ही बराबर प्रयत्न करते रहना, **अज्ञानपरीषहजय** है।

इसका स्वरूप स्पष्ट करते हुए लिखा है –

सावधान वर्ते निशिवासर संयमशूर परमवैरागी।
पालत गुप्ति गये दीरघ दिन सकलसंग ममता परत्यागी।।
अवधिज्ञान अथवा मनपर्यय केवलि ऋद्धि न अजहूं जागी।
यों विकल्प नहिं करैं तपोनिधि सो अज्ञान विजयी बड़भागी।।२१।।

अपनी चर्या के प्रति निरन्तर दिन-रात सावधान रहनेवाले संयम पालन करने में शूरवीर (परम वैरागी मुनिराज) को तीन गुप्तियों की साधना करते हुए बहुत दिन बीत गये हैं और वे सम्पूर्ण परिग्रह और उसके प्रति होनेवाली ममता के पूर्णत: त्यागी हैं। ऐसी स्थिति होने पर भी अभी तक न केवलज्ञान हुआ और न अवधिज्ञान और मन:पर्ययज्ञान ही हुए हैं। वे मुनिराज इसप्रकार के विकल्प नहीं करते। वे भाग्यवान मुनिराज अज्ञान परीषह को जीतनेवाले हैं।

(२२) अदर्शन – श्रद्धान से च्युत होने के निमित्त उपस्थित होने पर भी मुनिमार्ग में बराबर आस्था बनाये रखना, **अदर्शनपरीषहजय** है।

इसका स्वरूप स्पष्ट करते हुए लिखा है –

मैं चिरकाल घोर तप कीना अजों ऋद्धि अतिशय नहिं जागैं।
तपबल सिद्ध होत सब सुनियत सो कुछ बात झूठ सी लागै।।
यों कदापि चित्त में नहिं चिंतत समकित शुद्ध शांति रस पागैं।
सोई साधु अदर्शनविजई ताके दर्शन से अघ भागैं।। २२।।

मैंने चिरकाल तक घोर तपश्चरण किया है; पर अभी तक कोई ऋद्धि या अतिशय नहीं हुआ। कहा जाता है कि तपबल से सबकुछ सिद्ध होता है – यह बात कुछ झूठी सी लगती है। – इसप्रकार का चिन्तन जिन मुनिराजों के चित्त में कदापि नहीं होता; वे शुद्ध शान्तिरस में पगे हुए सम्यग्दृष्टि साधु अदर्शन परीषहजयी हैं। उनके दर्शन से पुण्य-पाप भाग जाते हैं।

यहाँ एक **प्रश्न** संभव है कि जब श्रावकगण मुनिराजों के उपसर्ग दूर करते हैं; उन्हें उनका उपसर्ग दूर करने का भाव आता है, आ सकता है तो फिर परीषहों की प्रतिकूलता दूर करने में क्या आपत्ति है ?

उत्तर – उपसर्ग दुष्टों द्वारा किये जाते हैं, वे तो अप्राकृतिक आपदायें हैं; अत: उन्हें दूर करने का भाव आना साधर्मी भाइयों को स्वाभाविक है; किन्तु **परीषह तो प्राकृतिक प्रतिकूलतायें हैं। उन्हें दूर करने का भाव साधर्मीजनों को नहीं आता।**

जब कोई दीक्षा लेता है तो वह अच्छी तरह जानता है कि मौसम की प्रतिकूलता तो आनेवाली ही है। जंगल में वास करेंगे तो वहाँ भी अनेकप्रकार की प्रतिकूलतायें होंगी ही।

इसीप्रकार क्षुधा-पिपासा, रोग आदि भी होंगे ही। **इन सब प्रतिकूलता में जीवन-यापन का संकल्प लेकर उन्होंने दीक्षा ली है तो फिर वे परीषहों के विरुद्ध व्यवस्था किसप्रकार चाह सकते हैं?**

जो मुनिराज सहजरूप से समागत परीषह को दूर करने का उपाय करते हैं, श्रावकों से कराते हैं और यदि कोई उनके कहे बिना ही परीषह दूर करते हैं तो उनकी अनुमोदना करते हैं; वे मुनिराज परीषहजयी मुनिराज नहीं हैं।।८-९।।

कौनसे गुणस्थान में कौन-कौनसे परीषह ?

२२ परीषहों का स्वरूप विस्तार से समझा; अब यह स्पष्ट करते हैं कि कौनसे गुणस्थान में कितने और कौन-कौनसे परीषह होते हैं।

तत्संबंधी सूत्र इसप्रकार है –

सूक्ष्मसाम्परायछद्मस्थवीतरागयोश्चतुर्दश ।।१०।।

एकादश जिने ।।११।।

बादरसाम्पराये सर्वे ।।१२।।

सूक्ष्म साम्पराय नामक दशवें गुणस्थान में और छद्मस्थ वीतराग दशा में अर्थात् ग्यारहवें और बारहवें गुणस्थान में चौदह परीषह होते हैं या चौदह परीषह होना संभव है।

जिनेन्द्र भगवान के अर्थात् तेरहवें गुणस्थान में ग्यारह परीषह होते हैं या ग्यारह परीषह होना संभव है।

बादर साम्पराय अर्थात् छठे गुणस्थान से नौवें गुणस्थान तक सभी परीषह होते हैं या सभी परीषह होना संभव है।

दशवें गुणस्थान से बारहवें गुणस्थान तक हो सकने योग्य चौदह परीषह इसप्रकार हैं –

१. क्षुधा, २. पिपासा, ३. शीत, ४. उष्ण, ५. दंशमशक, ६. चर्या, ७. शय्या, ८. वध, ९. अलाभ, १०. रोग, ११. तृणस्पर्श, १२. मल, १३. प्रज्ञा और १४. अज्ञान।

इसीप्रकार तेरहवें गुणस्थान में जिनेन्द्र भगवान के हो सकने योग्य ग्यारह परीषह इसप्रकार हैं –

१. क्षुधा, २. पिपासा, ३. शीत, ४. उष्ण, ५. दंशमशक, ६. चर्या, ७. शय्या, ८. वध, ९. रोग, १०. तृणस्पर्श और ११. मल।।१०-१२।।

किस कर्म के सद्भाव में कौनसा परीषह ?

कौनसे गुणस्थान में कौन-कौनसे परीषह हो सकते हैं – यह स्पष्ट हो जाने के बाद अब यह स्पष्ट करते हैं कि किस कर्म के उदय से कौनसा परीषह होता है।

ज्ञानावरणे प्रज्ञाज्ञाने ।।१३।।

दर्शनमोहान्तराययोरदर्शनालाभौ ।।१४।।

चारित्रमोहे नाग्न्यारतिस्त्रीनिषद्याक्रोशयाचनासत्कारपुरस्काराः ।।१५।।

वेदनीये शेषाः ।।१६।।

ज्ञानावरण के सद्भाव में प्रज्ञा और अज्ञान परीषह होते हैं।

दर्शनमोह के सद्भाव में अदर्शन और अन्तराय के सद्भाव में अलाभ परीषह होता है।

चारित्रमोह के सद्भाव में नाग्न्य, अरति, स्त्री, निषद्या, आक्रोश, याचना और सत्कार-पुरुस्कार परीषह होते हैं।

शेष सभी परीषह वेदनीय कर्म के सद्भाव में होते हैं।

यहाँ एक प्रश्न संभव है कि ज्ञानावरण के सद्भाव में अज्ञान परीषह होने की बात तो ठीक; पर ज्ञानावरण के सद्भाव में प्रज्ञापरीषह कैसे हो सकता है; क्योंकि प्रज्ञा तो ज्ञानावरण के क्षयोपशमरूप भाव का नाम है, क्षयोपशमरूप भाव के सद्भाव का नाम है।

इस प्रश्न का उत्तर सर्वार्थसिद्धि नामक ग्रन्थ में आचार्य पूज्यपाद ने इसप्रकार दिया है –

''क्षायोपशमिकी प्रज्ञा अन्य ज्ञानावरण के होने पर मद को उत्पन्न करती है, समस्त ज्ञानावरण के क्षय होने पर मद नहीं होता; इसलिए ज्ञानावरण के होने पर प्रज्ञापरीषह होता है – यह कथन बन जाता है।''

इसीप्रकार का भाव तत्त्वार्थराजवार्तिक में आचार्य अकलंकदेव व्यक्त करते हैं। उनका स्पष्ट कहना है –

''मैं बड़ा विद्वान हूँ – यह प्रज्ञा मद मोह का कार्य न होकर ज्ञानावरण का कार्य है।[१]''

दर्शनमोह के उदय से होनेवाले अदर्शनपरीषह के संदर्भ में पण्डित फूलचंदजी द्वारा निम्नांकित विशेषार्थ विशेष देखने योग्य है –

''दर्शनमोह से यहाँ सम्यक्त्वमोहनीय प्रकृति ली गयी है। इसका उदय रहते हुए चल, मल और अगाढ़ दोष उत्पन्न होते हैं।

सम्यक्त्व के रहते हुए भी आप्त, आगम और पदार्थों के विषय में नाना विकल्प होना चल दोष है। जिसप्रकार जल के स्वस्थ होते हुए भी उसमें वायु के निमित्त से तरंगमाला उठा करती है; उसीप्रकार सम्यग्दृष्टि पुरुष यद्यपि अपने स्वरूप में स्थित

१. तत्त्वार्थवार्तिक, पृष्ठ ७८२

रहता है, तथापि **सम्यक्त्व मोहनीय के उदय से आप्त, आगम और पदार्थों के विषय में उसकी बुद्धि चलायमान होती रहती है। यही चल दोष है।**

मल का अर्थ मैल है। **शंकादि दोषों के निमित्त से सम्यग्दर्शन का मलिन होना मल दोष है।** यह भी सम्यक्त्व मोहनीय के उदय में होता है।

तथा **अगाढ़ का अर्थ स्थिर न रहना है।** सम्यग्दृष्टि जीव लौकिक प्रयोजनवश कदाचित् तत्त्व से चलायमान होने लगता है। उदाहरणार्थ – 'अन्य, अन्य का कर्ता नहीं होता' – यह सिद्धान्त है और सम्यग्दृष्टि इसे भलीप्रकार जानता है, पर रागवश वह इस सिद्धान्त पर स्थिर नहीं रह पाता। **कदाचित् वह पारमार्थिक कार्य को भी लौकिक प्रयोजन का प्रयोजक मान बैठता है।**

इसप्रकार सम्यक्त्व मोहनीय के उदय से तीन दोष होते हैं। ये तीनों एक हैं फिर भी भिन्न-भिन्न अभिप्राय की दृष्टि से यहाँ इन्हें पृथक्-पृथक्रूप से परिगणित किया है।

प्रकृत में इसी दोष को ध्यान में रखकर अदर्शन परीषह का निर्देश किया है। यह दर्शनमोहनीय के उदय से होता है, इसलिए इसे दर्शन मोहनीय का कार्य कहा है।''

यहाँ एक महत्त्वपूर्ण प्रश्न संभव है कि जब असातावेदनीय कर्म के उदय से होनेवाला क्षुधापरीषह केवली भगवान के होता है तो फिर क्षुधा के निवारणार्थ उनके कवलाहार भी होना चाहिए।

उक्त प्रश्न का समाधान करते हुए सिद्धान्ताचार्य पण्डित फूलचन्दजी विशेषार्थ में लिखते हैं –

''जिन भगवान के असाता वेदनीय का उदय होता है और यह क्षुधादि वेदना का कारण है; इसलिए यहाँ जिन भगवान के कारण की दृष्टि से क्षुधादि ग्यारह परीषह कहे जाते हैं। **पर क्या सचमुच में जिन भगवान के क्षुधादि ग्यारह परीषह होते हैं यह एक प्रश्न है, जिसका समाधान टीका में दो प्रकार से किया है।**

पहले तो जिन भगवान के क्षुधादि परीषहों के होने के कारण सद्भाव की अपेक्षा उनके उपचार से अस्तित्व का निर्देश किया है, पर कार्यरूप में क्षुधादि ग्यारह परीषह जिन भगवान के नहीं होते, इसलिए इस दृष्टि से 'न सन्ति' इस वाक्यशेष की योजना कर वहाँ उनका निषेध किया है।

अब यहाँ यह देखना है कि जिन भगवान के क्षुधादि ग्यारह परीषह नहीं होते, यह कैसे समझा जाय। वे इस काल में पाये तो जाते नहीं, इसलिए प्रत्यक्ष देखकर तो यह जाना नहीं जा सकता। एक मात्र आगम को पुष्ट करनेवाली युक्तियाँ ही शेष रहती हैं, जिनके अवलम्बन से यह बात समझी जा सकती है, अत: यहाँ उन्हीं का निर्देश करते हैं –

१. केवली जिन के शरीर में निगोद और त्रस जीव नहीं रहते। उनका क्षीणमोह गुणस्थान में अभाव होकर वे परम औदारिक शरीर के धारी होते हैं। अत: **भूख, प्यास और रोगादिक का कारण नहीं रहने से उन्हें भूख, प्यास और रोगादिक की बाधा नहीं होती।**

देवों के शरीर में इन जीवों के न होने से जो विशेषता होती है, उससे अनन्तगुणी विशेषता इनके शरीर में उत्पन्न हो जाती है।

२. श्रेणी आरोहण करने पर प्रशस्त प्रकृतियों का अनुभाग उत्तरोत्तर अनन्तगुणा बढ़ता जाता है और अप्रशस्त प्रकृतियों का अनुभाग प्रतिसमय अनन्तगुणा हीन होता जाता है। **इसलिए तेरहवें गुणस्थान में होनेवाला असाता प्रकृति का उदय इतना बलवान नहीं होता, जिससे उसे क्षुधादि कार्यों का सूचक माना जा सके।**

३. असाता की उदीरणा छठे गुणस्थान तक ही होती है, आगे नहीं होती, इसलिए उदीरणा के अभाव में वेदनीय कर्म क्षुधादिरूप कार्य का वेदन कराने में असमर्थ है। जबकि केवली जिन के शरीर को पानी और भोजन की ही आवश्यकता नहीं रहती, तब इनके न मिलने से जो क्षुधा और तृषा होती है, वह उनके हो ही कैसे सकती है?

वेदनीय कर्म का कार्य कुछ शरीर में पानी तत्त्व और भोजन तत्त्व का अभाव करना नहीं है। वास्तव में इनका अभाव अन्य कारणों से होता है। हाँ, इनका अभाव होने पर इनकी पूर्ति के लिए जो वेदना होती है, वह वेदनीय कर्म का काम है। सो जबकि केवली जिन के शरीर को उनकी आवश्यकता ही नहीं रहती, तब

वेदनीय के निमित्त से तज्जनित वेदना कैसे हो सकती है ? अर्थात् नहीं हो सकती।

४. केवली जिन के साता का आस्रव सदाकाल होने से उसकी निर्जरा भी सदाकाल होती रहती है, इसलिए जिस काल में असाता का उदय होता है, उस काल में केवल उसका ही उदय नहीं होता, किन्तु **उससे अनन्तगुणी शक्तिवाले साता के साथ वह उदय में आता है। माना कि उस समय उसका स्वमुखेन उदय है, पर वह प्रतिसमय बँधनेवाले साता कर्मपरमाणुओं की निर्जरा के साथ ही होता है, इसलिए असाता का उदय वहाँ क्षुधादि रूप वेदना का कारण नहीं हो सकता।**

५. सुख-दु:ख का वेदन वेदनीय कर्म का कार्य होने पर भी वह मोहनीय की सहायता से ही होता है। यत: केवली जिन के मोहनीय का अभाव होता है, अत: वहाँ क्षुधादिरूप वेदनाओं का सद्भाव मानना, युक्तिसंगत प्रतीत नहीं होता।

इन प्रमाणों से निश्चित होता है कि केवली जिन के क्षुधादि ग्यारह परीषह नहीं होते।''

प्रश्न – यदि केवली भगवान के क्षुधादि ग्यारह परीषह नहीं होते तो सूत्र में ऐसा क्यों कहा है कि जिनेन्द्र भगवान के ग्यारह परीषह होते हैं ?

उत्तर – उक्त कथन उपचरित कथन है; जो असाता वेदनीय के उदय के कारण व्यवहारनय से किया गया है।

असाता वेदनीय के तीव्रोदय के बिना न तो ग्यारह परीषह होते हैं और न कवलाहार ही होता है।

तेरहवें गुणस्थान में असातावेदनीय का अत्यन्त मन्द उदय है; इसलिए तेरहवें गुणस्थान में क्षुधादि परीषह नहीं होते।।१३-१६।।

एकसाथ कितने परीषह ?

किस कर्म के सद्भाव में कौनसे परीषह होते हैं – यह स्पष्ट हो जाने के बाद अब यह समझाते हैं कि एक जीव के एकसाथ कितने परीषह हो सकते हैं ?

एकादयो भाज्या युगपदेकस्मिन्नैकोनविंशतेः।।१७।।

एक आत्मा के एकसाथ एक से लेकर उन्नीस तक परीषह हो सकते हैं।

शीत और उष्ण में कोई एक और चर्या, शय्या और निषद्या – इन तीन में कोई एक – इसतरह तीन परीषह कम हो जाते हैं।

प्रश्न – प्रज्ञा और अज्ञान में से भी तो कोई एक ही परीषह होगा; क्योंकि जिसके प्रज्ञा होगी, उसके अज्ञान का होना संभव नहीं है।

उत्तर – श्रुतज्ञान की अपेक्षा प्रज्ञा का प्रकर्ष होने पर भी अवधिज्ञान आदि की अपेक्षा अज्ञान हो सकता है। अत: दोनों के एकसाथ होने में कोई विरोध नहीं है।।१७।।

चारित्र के भेद

संवर के कारणों में गुप्ति, समिति, धर्म, अनुप्रेक्षा और परिषहों की चर्चा के उपरान्त अब चारित्र के भेदों की चर्चा करते हैं।

सामायिकच्छेदोपस्थापनापरिहारविशुद्धिसूक्ष्मसाम्पराय यथाख्यातमिति चारित्रम्।।१८।।

सामायिक, छेदोपस्थापना, परिहारविशुद्धि, सूक्ष्मसांपराय और यथाख्यात – ये पाँच, चारित्र के प्रकार हैं।

१. सामायिकचारित्र – समस्त सावद्ययोग का अभेदरूप से त्याग करना, सामायिकचारित्र है।

२. छेदोपस्थापनाचारित्र – सामायिकचारित्र से डिगने पर प्रायश्चित्त के द्वारा सावद्य व्यापार में लगे हुए दोषों को छेद कर पुन: संयम धारण करना, छेदोपस्थापनाचारित्र है अथवा **समस्त सावद्य योग का भेदरूप से त्याग करना, छेदोपस्थापनाचारित्र है।**

३. परिहारविशुद्धिचारित्र – जिस चारित्र में प्राणीहिंसा की पूर्ण निवृत्ति होने से विशिष्ट विशुद्धि पायी जाती है, उसे परिहारविशुद्धि कहते हैं।

४. सूक्ष्मसांपरायचारित्र – अत्यन्त सूक्ष्म कषाय के होने से सूक्ष्म सांपराय नाम के दसवें गुणस्थान में जो चारित्र होता है, उसे सूक्ष्म सांपरायचारित्र कहते हैं।

५. यथाख्यातचारित्र – समस्त मोहनीय कर्म के उपशम से अथवा क्षय से

जैसा आत्मा का निर्विकार स्वभाव है, वैसा ही स्वभाव पर्याय में प्रगट हो जाना, यथाख्यातचारित्र है।

इसप्रकार ये पाँच प्रकार चारित्र के हैं; जो नग्न दिगम्बर मुनिराजों के होते हैं। **इनसे पूर्ण वीतरागता की प्राप्ति हो जाने से सहज ही सिद्ध दशा की प्राप्ति हो जाती है।।१८।।**

तप के भेद

चारित्र की चर्चा के उपरान्त अब तप की बात करते हैं। तप दो प्रकार के होते हैं – १. बाह्य तप और २. आभ्यन्तर तप।

तप संबंधी सूत्र इसप्रकार है –

अनशनावमौदर्यवृत्तिपरिसंख्यानरसपरित्यागविविक्तशय्यासनकायक्लेशा बाह्यं तपः ।।१९।।

प्रायश्चित्तविनयवैयावृत्यस्वाध्यायव्युत्सर्गध्यानान्युत्तरम् ।।२०।।

अनशन, अवमौदर्य, वृत्तिपरिसंख्यान, रसपरित्याग, विविक्त शय्यासन और कायक्लेश – ये छह प्रकार के बहिरंग तप हैं।

प्रायश्चित्त, विनय, वैयावृत्त्य, स्वाध्याय, व्युत्सर्ग (त्याग) और ध्यान – ये छह प्रकार के अंतरंग तप हैं।

तप दो प्रकार का माना गया है – १. बहिरंग और २. अंतरंग।

बहिरंग तप छह प्रकार का होता है – १. अनशन, २. अवमौदर्य, ३. वृत्तिपरिसंख्यान, ४. रसपरित्याग, ५. विविक्तशय्यासन और ६. कायक्लेश।

इसीप्रकार **अंतरंग तप भी छह प्रकार का होता है –** १. प्रायश्चित्त, २. विनय, ३. वैयावृत्त्य, ४. स्वाध्याय, ५. व्युत्सर्ग (त्याग) और ६. ध्यान।

इसप्रकार कुल तप बारह प्रकार के होते हैं।

उक्त समस्त तपों में – चाहे वे बाह्य तप हों या अंतरंग, एक शुद्धोपयोगरूप वीतरागभाव की ही प्रधानता है। इच्छाओं के निरोधरूप शुद्धोपयोगरूपी वीतरागभाव ही सच्चा तप है। प्रत्येक तप में वीतराग भाव की वृद्धि होनी ही चाहिए – तभी वह तप है, अन्यथा नहीं।

इस संदर्भ में आचार्यकल्प पंडित टोडरमलजी के विचार द्रष्टव्य हैं –

“अनशनादि को तथा प्रायश्चित्तादि को तप कहा है; क्योंकि अनशनादि साधन से प्रायश्चित्तादिरूप प्रवर्त्तन करके वीतरागभावरूप सत्यतप का पोषण किया जाता है; इसलिए उपचार से अनशनादि को तथा प्रायश्चित्तादि को तप कहा है; कोई वीतरागभावरूप तप को न जाने और इन्हीं को तप जानकर संग्रह करे तो संसार ही में भ्रमण करेगा। बहुत क्या, **इतना समझ लेना कि निश्चयधर्म तो वीतरागभाव है, अन्य नाना विशेष बाह्यसाधन की अपेक्षा उपचार से किए हैं, उनको व्यवहारमात्र धर्मसंज्ञा जानना।**[१]”

एक बात यह भी ध्यान देने योग्य है कि उक्त बारह तपों में प्रथम की अपेक्षा दूसरा, दूसरे की अपेक्षा तीसरा, इसीप्रकार **अन्त तक उत्तरोत्तर तप अधिक उत्कृष्ट और महत्त्वपूर्ण है।**

अनशन पहला तप है और ध्यान अन्तिम। ध्यान यदि लगातार अन्तर्मुहूर्त करे तो निश्चितरूप से केवलज्ञान की प्राप्ति होती है, किन्तु उपवास वर्ष भर भी करे तो केवलज्ञान की गारंटी नहीं।

यह नकली उपवास की बात नहीं, असली उपवास की बात है। प्रथम तीर्थंकर मुनिराज ऋषभदेव दीक्षा लेते ही एक वर्ष, एक माह और आठ दिन तक निराहार रहे, फिर भी हजार वर्ष तक केवलज्ञान नहीं हुआ। **भरत चक्रवर्ती को दीक्षा लेने के बाद आत्मध्यान के बल से एक अन्तर्मुहूर्त में ही केवलज्ञान हो गया।**

इससे यह सहज ही सिद्ध होता है कि ये तप उत्तरोत्तर आगे-आगे के महान हैं।

अंतरंग तप महान हैं; अत: उन्हें पहले कहा जाना चाहिए था; तथापि यहाँ बहिरंग तपों को पहले लिया है; क्योंकि बहिरंग तपों को संक्षेप में कहकर अंतरंग तपों को विस्तार देना था। **बहिरंग तपों के तो नाममात्र गिनाये हैं; पर अंतरंग तपों के भेद-प्रभेदों की विस्तार से चर्चा की है, इससे अंतरंग तपों की महिमा ध्यान में आती है।**

अरे, भाई ! जिनमें स्वाध्याय और ध्यान जैसे तप हों; उनकी जितनी अधिक चर्चा की जाये, उतनी ही कम है। (क्रमश:)

१. मोक्षमार्गप्रकाशक, पृष्ठ २३३

छहढाला प्रवचन

मोक्ष का एकमात्र उपाय भेदज्ञान

जे पूरब शिव गये, जाहिं अरु आगे जैहैं।
सो सब महिमा ज्ञानतनी, मुनिनाथ कहै हैं।।
विषय चाह दव दाह, जगत जन अरनि दझावै।
तास उपाय न आन, ज्ञान घनाघन बुझावै।।८।।

(सुप्रसिद्ध आध्यात्मिक विद्वान पण्डित दौलतरामजीकृत छहढाला की चौथी ढाल पर गुरुदेवश्री के प्रवचन पाठकों के लाभार्थ यहाँ प्रस्तुत किये जा रहे हैं।)

(गतांक से आगे....)

जो अनन्त जीव पहले मोक्ष गए हैं, अब जा रहे हैं और भविष्य में जावेंगे, वह सब सम्यग्ज्ञान की ही महिमा है – ऐसा मुनिनाथ कहते हैं। जिसप्रकार आग अरनि के जंगल को जला देती है, उसीप्रकार विषयों की चाहनारूपी भयंकर दावानल संसारी जीवों को जला रही है, उसको यह ज्ञानरूपी मेघ धारा ही बुझाकर शान्त करती है, ज्ञान के अलावा उसका उपाय अन्य कोई नहीं है।

आत्मा के सच्चे ज्ञान से चैतन्य सुख का अनुभव जहाँ तक न हो, वहाँ तक शुभ या अशुभ पर-विषयों में सुखबुद्धि रहती है अर्थात् विषयों की चाहना की ज्वाला में जीव जला ही करता है, दु:खी होता ही रहता है। जिसने स्व-पर की भिन्नता जानकर चैतन्य समुद्र की अगाध शान्ति अपने में देखी, उसने विषयों से भिन्न सुख अपने में देखा, उसीसमय उसे अपूर्व चैतन्यरस की धारा से विषयों की चाह छूट जाती है। सम्यग्ज्ञान होने पर आत्मा के अतिरिक्त अन्य सभी में से सुखबुद्धि हट जाती है। कविवर बनारसीदासजी ने नाटक समयसार में लिखा है –

ज्ञानकला जिनके घट जागी, ते जग मांहि सहज वैरागी।
ज्ञानी मगन विषयसुख मांही, यह विपरीत संभवै नाहीं।।

तीनों काल भेदज्ञान से चैतन्य सुख का अनुभव कर-करके ही जीव मोक्ष में जाते हैं। पर से भिन्न चैतन्य तत्त्व की लगन लगाकर जिसने सम्यग्ज्ञान ज्योति प्रकट

की, उसी जीव ने मोक्ष सुख पाया, वे ही पाते हैं और पावेंगे। विदेह क्षेत्र में या भरत में, चौथेकाल में या पंचमकाल में, जिस किसी जीव ने मोक्ष पाया, जो पाता है और पावेगा वह ज्ञान के सेवन से ही समझना। समयसार की टीका में मुनिनाथ श्री अमृतचन्द्र स्वामी कहते हैं –

भेदविज्ञानत: सिद्धा: सिद्धा: ये किल केचन।
अस्यैभावतो बद्धा बद्धा ये किल केचन।।

सम्यग्दर्शन कहो, भेदज्ञान कहो, ज्ञान की आराधना कहो, वही मोक्ष का उपाय है। मुनियों के नाथ ऐसा कहते हैं कि ज्ञान की आराधना से ही मोक्ष प्राप्त होता है। आत्मा अपने ज्ञान की अनुभूति रूप से परिणमे, वही मोक्ष का हेतु है। इसमें सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्र तीनों समा जाते हैं। सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्र, ये तीनों ज्ञानमय हैं, राग रहित हैं, उनमें राग का कोई अंश नहीं समाता, राग से खिसककर चैतन्यभाव में बसना ही मोक्ष का पंथ है।

सम्पूर्ण मोक्षमार्ग ज्ञानमय है। ज्ञान की श्रद्धा, ज्ञान का ज्ञान और ज्ञान का ही आचरण, इसप्रकार ज्ञान की अनुभूति में मोक्षमार्ग समाविष्ट है। ज्ञान के अनुभव से भिन्न कोई मोक्ष का कारण नहीं है।

अहो ! ज्ञान की महिमा तो देखो। ज्ञान अर्थात् सम्पूर्ण आत्मा को पहिचानने पर सम्यग्ज्ञान हुआ और मोक्षमार्ग खुला, मुनियों ने उसको मोक्षमार्ग में स्वीकार किया। मुनियों के नाथ ऐसे अरहंत भगवन्तों ने तथा गणधरादि महान मुनियों ने भेदज्ञान को ही मोक्ष का कारण जानकर उसकी प्रशंसा की है। ऐसे मोक्षमार्ग को पहिचानकर जो भेदज्ञान प्रकट करे उसी ने अरहन्तों की और मुनियों की आज्ञा स्वीकार की है। जो इसके विरुद्ध अन्य रीति से मोक्षमार्ग माने, शरीर की क्रिया को अथवा शुभराग को मोक्ष का कारण माने, उसने वीतराग अरहन्तों की आज्ञा नहीं मानी।

बापू ! मोक्षमार्ग में हम शुभ राग की प्रशंसा नहीं करते, हम तो वीतरागी ज्ञान की ही प्रशंसा करते हैं। चौथे गुणस्थान में जो सम्यग्ज्ञान है। वह भी राग से भिन्न होने के कारण वीतरागी ही है, ऐसे सम्यग्ज्ञान की महिमा तो जाने नहीं और बाहर में शुभ राग की महिमा करके उसमें एकाकार रहे तो उस जीव ने भगवान अरहन्त के

मार्ग को नहीं जाना, मुनियों को नहीं पहिचाना और वह मुक्ति मार्ग से भी परिचित नहीं हुआ, भाई ! मुक्ति का मार्ग तो अन्दर चैतन्य के स्वभाव में से आता है, राग में से नहीं आता।

आत्मा के सच्चे ज्ञान बिना राग की मिठास नहीं छूटती और विषयों की चाह रूपी आग नहीं बुझती। जहाँ चैतन्य की शान्तिरूप मेघ जल नहीं, वहाँ विषयों में जलते हुए जीवों की आग कहाँ से बुझेगी ? बापू ! आत्मा को भूलकर तू संसार में राग की भट्टी में जल रहा है। आगे कहेंगे – यह राग आग दहै सदा, तातैं समामृत सेइए।

शुभ या अशुभ राग तो आग है, उसमें तू सदा जल रहा है, इसलिए ज्ञानरूपी अमृत का सिंचन करके उस आग को शान्त कर, अन्य किसी उपाय से वह आग नहीं बुझ सकती। ज्ञान से अन्तर में उतरकर चैतन्य की शन्ति में समुद्र में डुबकी मारे तो बाह्य विषयों की चाह मिट जायेगी और तुझे परम शान्ति का वेदन होगा चैतन्य स्वरूपी आत्मा महा शान्ति का सागर है, उसके शान्त रस के सिंचन से विषयों की आग बुझ जायेगी और चैतन्य की परम शान्ति अनुभव में आयेगी।

यहाँ आत्मा के सम्यग्ज्ञान की महिमा बतलाकर उसकी आराधना करने को कहा है। कौन कहते हैं ? मुनियों के नाथ कहते हैं अर्थात् जिनेन्द्रदेव और गणधरदेव इस सम्यग्ज्ञान की महिमा कहते हैं। हे भव्य जीवो ! भेदज्ञान से ही कल्याण सधता है, इसलिए तुम करोड़ों उपायों से भी आत्मा को जानकर सम्यग्ज्ञान प्रकट करो।

छह मास आठ समय में ६०८ जीव अनादि काल से मोक्ष जा रहे हैं और सदा ही जाते रहेंगे। उन सबने क्या करके मोक्ष पाया ? कि आत्मा के ज्ञान से ही मोक्ष पाया और भविष्य में भी इसीप्रकार मोक्ष पावेंगे। श्रीमद् राजचन्द्र ने कहा है –

''एक होय त्रणकाल में परमारथ का पंथ''

सम्यग्ज्ञान की कोई अपार महिमा है, क्योंकि वह जीव को मोक्ष प्राप्त करवाता है। राग में ऐसी शक्ति नहीं कि जीव को मोक्ष प्राप्त करावे। अनन्त बार मुनिव्रत पालने का शुभ राग किया, किन्तु उससे मुक्ति तो नहीं मिली। मुक्ति का उपाय शुभ-अशुभ दोनों से रहित, आत्मा के अनुभवरूप ज्ञान ही है। इस ज्ञान की महिमा अचिन्त्य है। चैतन्य स्वभाव का अपार सामर्थ्य है, विभाव उससे विपरीत है और परद्रव्य उससे पृथक् है – इसप्रकार विवेक करके स्व-पर को भिन्न जानना,

इसीप्रकार विभावों से चैतन्य स्वभाव की भिन्नता जानना और चैतन्य स्वभाव के महान सामर्थ्य को जानकर उसके सन्मुख होना। इस उपाय के द्वारा सम्यग्ज्ञान करने से जीव को मोक्ष प्राप्त होता है। मुनिनाथ कहते हैं कि अरे भैया ! अनन्त सिद्ध भगवन्तों ने जिस पंथ से सिद्धि प्राप्त की, उन्हीं भगवन्तों ने ऐसे भेदज्ञान से ही मुक्ति पाई है। सीमन्धरादि भगवन्त भी ऐसे ही भेदज्ञान से वर्तमान में मुक्त हो रहे हैं, और वैसे ही मार्ग का उपदेश दे रहे हैं।

सभी तीर्थंकर भगवन्तों ने एक ही प्रकार से मोक्षमार्ग की उपासना की है और एक ही प्रकार का उपदेश दिया है, क्योंकि मोक्ष के लिए दूसरे मार्ग का अभाव है।

(क्रमश:)

पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट, जयपुर द्वारा संचालित एवं
अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन, विदिशा द्वारा आयोजित

50वाँ वीतराग-विज्ञान आध्यात्मिक शिक्षण-प्रशिक्षण शिविर

दिनांक 15 मई 2016 से 1 जून 2016 तक

- आध्यात्मिकसत्पुरुष श्रीकानजीस्वामी के भवतापहारी सी.डी. प्रवचन का प्रसारण।
- डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल जयपुर आदि अनेक आत्मार्थी विद्वानों का भरपूर लाभ।
- ज्ञान-वैराग्य-अध्यात्म से भरे हुए आध्यात्मिक सांस्कृतिक कार्यक्रम।
- श्रीजी एवं जिनवाणी की भव्य व विशाल शोभा यात्रा।
- देशभर के अलग-अलग प्रान्तों से पधार रहे साधर्मीजनों का मेला।
- श्री टोडरमल सिद्धान्त महाविद्यालय में प्रवेश लेने हेतु अपूर्व अवसर।

आप सभी को शिविर में पधारने हेतु हार्दिक आमंत्रण है।

हार्दिक अनुरोध :- श्री टोडरमल दिग. जैन सिद्धांत महाविद्यालय हेतु छात्रों का चयन इसी प्रशिक्षण शिविर में होता है; अत: महाविद्यालय में प्रवेश हेतु अधिक से अधिक छात्रों को प्रेरणा देकर शिविर में भिजवायें।

संपर्क सूत्र -

ज्ञानतीर्थ श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-4, बापूनगर, जयपुर 302015 (राज.)
फोन-0141-2705581, 2707458; Email - ptstjaipur@yahoo.com

नियमसार प्रवचन –

कायगुप्ति का स्वरूप

परमपूज्य सर्वश्रेष्ठ दिगम्बराचार्य कुन्दकुन्द के प्रसिद्ध परमागम नियमसार के शुद्धभावाधिकार की 70वीं गाथा पर हुये आध्यात्मिकसत्पुरुष श्री कानजीस्वामी के अध्यात्मरस गर्भित प्रवचनों का संक्षिप्त सार यहाँ दिया जा रहा है।

गाथा मूलत: इसप्रकार है –

कायकिरियाणियत्ती काउस्सग्गो सरीरगे गुत्ती।
हिंसाइणियत्ती वा सरीरगुत्ति त्ति णिद्दिट्ठा।।७०।।

(हरिगीत)

दैहिक क्रिया की निर्वृत्ति तनगुप्ति कायोत्सर्ग है।
या निवृत्ति हिंसादि की ही कायगुप्ति जानना।। ७०।।

कायक्रियाओं की निवृत्तिरूप कायोत्सर्ग शरीर सम्बन्धी गुप्ति है अथवा हिंसादि की निवृत्ति को शरीर गुप्ति कहा है।

(गतांक से आगे....)

अरहन्त भगवान की आत्मा ने आत्मा का भान करके तथा उसमें परिपूर्ण लीनता द्वारा चार घन अर्थात् गाढ़ घातिकर्मों का नाश किया है और केवलज्ञान-दर्शनादि परमगुणों को प्राप्त किया है। आत्मा त्रिकाल ज्ञानमूर्ति है, उसका भान करके तथा उसीमें एकाग्र होकर अनन्तज्ञान प्रकट किया; आत्मा त्रिकाली दर्शनशक्ति से पूर्ण है, उसमें एकाग्र होकर अनन्तदर्शन प्रकट किया; आत्मा त्रिकाली सुखशक्ति से पूर्ण है, उसमें एकाग्र होकर अनन्तसुख प्रकट किया; आत्मा त्रिकाली वीर्यशक्ति की मूर्ति है, उसमें लीन होकर अनन्तवीर्य प्रकट किया – इसप्रकार केवलज्ञानादि परमगुणों सहित श्री अरहन्तभगवान हैं और पुण्य प्रकृति के फलस्वरूप उनके ३४ अतिशय हैं।

अरहन्त भगवान के कथन का आशय समझकर आत्मा को समझे, तब व्यवहार से अरहन्त को माना – ऐसा कहा जाय।

अर्हन्तभगवान आत्मगुण के घातक ज्ञानावरण, दर्शनावरण, अन्तराय और मोहनीय कर्म से रहित कहे गए हैं।

वास्तव में कर्म आत्मगुणों को घातते नहीं हैं। स्वयं स्वरूप से चूकने पर कर्म के ऊपर निमित्तपने का आरोप आता है। एक द्रव्य दूसरे द्रव्य का अर्थात् एक द्रव्य की पर्याय दूसरे द्रव्य की पर्याय का घात करे – ऐसा नहीं हो सकता; क्योंकि त्रिकाली सिद्धान्त ऐसा है कि वस्तुस्वभाव पर के द्वारा उत्पन्न नहीं किया जा सकता और न ही वस्तुस्वभाव किसी पर को उत्पन्न ही कर सकता है; ऐसी स्थिति में एक पदार्थ दूसरे पदार्थ में किंचित् भी विक्रिया उत्पन्न नहीं कर सकता अर्थात् प्रत्येक द्रव्य अपनी ही पर्याय को कर सकता है, अन्य की पर्याय को रंचमात्र भी नहीं।

अज्ञानी जीव ने 'मैं (आत्मा) ज्ञानानन्दस्वभावी हूँ, कर्म तथा रागादि विकार मेरे में हैं नहीं' – ऐसा निश्चय नहीं किया है; इसलिये वह ज्ञान-दर्शन की हीन अवस्था करने स्वरूप स्वयं अपना घात करता है, तब ज्ञान-दर्शनावरणकर्म का निमित्त कहा जाता है। आत्मा स्वयं ज्ञानानन्दस्वभाव का पिण्ड है, वह अपने स्वरूप को चूककर हीन और विपरीत अवस्थारूप से परिणमा, तब कर्म निमित्त है, इसलिए कर्म ने हीनावस्था की – ऐसा व्यवहार से कहा जाता है। वास्तव में आत्मा कर्म के द्वारा हानि प्राप्त नहीं करता, किन्तु अपने विपरीत पुरुषार्थ से स्वयं अपने गुणों का घात करता है, तब कर्म पर निमित्तपने का आरोप आता है और कहा जाता है कि इसने इसका घात किया।

घातिकर्म को गाढ़ कहा। जिस प्रकार घने बादल सूर्य के प्रकाश को रोकते हैं; उसी प्रकार आत्मगुणों को गाढ़ घातिकर्म रोकते हैं – ऐसा कहा जाता है – किन्तु वास्तव में ऐसा नहीं है। घने बादल सूर्य के प्रकाश को रोकते हैं, वह तो समझाने के लिए उदाहरण दिया है। आत्मा जहाँ अपनी सामर्थ्य से जागृत हुआ वहाँ उसे रोकने के लिए कोई भी समर्थ नहीं हैं।

ज्ञानावरण – आत्मा स्वयं ज्ञाता-दृष्टा स्वभाव में न रहे, तथा मैं पर को लाभ कर दूँ और पर मुझे लाभ कर दे – ऐसी पराधीन मान्यता करे, तब ज्ञान हीन हो जाता है; उस हीनता में जो निमित्त है उसे ज्ञानावरणकर्म कहते हैं।

दर्शनावरण – आत्मा का त्रिकाली दर्शनस्वभाव है, उसमें न रहने पर दर्शन का हीन परिणमन होता है, उसमें जो निमित्त कर्म है उसे दर्शनावरण कहते हैं।

अन्तराय – आत्मबल को जीव शुभ-अशुभ भाव में रोकता है, इसलिए पर्याय में आत्मा का वीर्य हीन हो जाता है, उसमें अन्तरायकर्म निमित्त कहा जाता है।

मोहनीय – दर्शनमोहनीय और चारित्रमोहनीय – ऐसे मोहनीय के दो भेद हैं। जीव स्वयं आत्मा को भूले और पर में – राग में अपनापन माने वह मिथ्यात्व है और उसमें दर्शनमोहनीयकर्म निमित्त है। जीव स्वयं शुभाशुभ राग करता है वह अपना अपराध है, उसमें चारित्रमोहनीयकर्म निमित्त है।

सर्वज्ञ भगवान अर्हन्तदेव इन चार कर्मों से रहित कहे गए हैं। वर्तमान में महाविदेह क्षेत्र में अर्हन्तदशा में श्री सीमन्धर भगवान विराजते हैं, उन्हें तीनलोक तीनकाल का ज्ञान वर्त रहा है, चार अघातिकर्म शेष हैं, समवशरण में वाणी के कारण उपदेश हो रहा है। भगवान उपदेश दे रहे हैं – यह निमित्त का कथन है।

पूर्व में विपरीत पुरुषार्थ से बोए हुए जो चार घातियाकर्म उनके नाश से प्राप्त होते हैं ऐसे – तीन लोक को प्रक्षोभ के हेतुभूत सर्वथा निर्मल केवलज्ञान, केवलदर्शन, केवलशक्ति और केवलसुख सहित अर्हन्त भगवान हैं।

भगवान चैतन्यसूर्य की किरणें पुण्य-पाप में अटकती थीं, उनको रोककर सम्पूर्णपने स्वभाव में लगा देने पर केवलज्ञान होता है, तब तीनों लोकों में आनन्द की खलबलाहट होती है, इन्द्र का इन्द्रासन कम्पायमान होता है और वह अवधिज्ञान के उपयोगपूर्वक जानता है कि अहो ! त्रिलोकीनाथ तीर्थंकर भगवान को केवलज्ञान प्रकट हुआ है। इन्द्र अपने परिवार सहित भगवान का केवलज्ञान कल्याणक मनाने के लिए आता है। नारकियों को भी दो घड़ी साता का अनुभव होता है। केवलज्ञान में तीनलोक तीनकाल हस्तामलकवत् ज्ञात होते हैं, जानने में कुछ भी शेष नहीं रहता। जिसप्रकार तीर्थंकर के ज्ञान-कल्याणक के समय तीनलोकों में आनन्दमय खलबलाहट होती है; उसीप्रकार उनके जन्म-दीक्षा आदि कल्याणकों के प्रसंग पर भी होती है – ऐसा जगत का और भगवान के पुण्य का निमित्त-नैमित्तिक सम्बन्ध है। वह आनन्दमय खलबलाहट कोई कराता नहीं है और हुए बिना रहती भी नहीं – ऐसा सहज योग है। वह आनन्द भगवान के कारण होता हो – ऐसा है नहीं, सबको अपने-अपने कारण से होता है, तब भगवान को निमित्त कहते हैं।

आत्मा सच्चिदानन्दस्वरूप है – इसप्रकार आत्मा को ज्ञान द्वारा पकड़ कर अन्तर में एकाग्र होने पर केवलज्ञान प्रकट हुआ, उसके साथ ही स्वरूपरचना के सामर्थ्यरूप अनन्तवीर्य-सम्पूर्णवीर्य – केवलीवीर्य भी प्रकट हुआ तथा केवलसुख – अकेला आनन्दपिण्ड-सच्चिदानन्द, जो शक्तिरूप था, वह भी पर्याय में प्रकट हुआ।

किसी परपदार्थ की क्रिया रोकना किसी के वश की बात नहीं है। जो कोई वस्तु है वह वर्तमान अपनी परिवर्तनशक्तियुक्त स्वयं है – ऐसा प्रथम निर्णय करके स्वरूप में स्थिर होनेवाले को केवलज्ञान प्रकट होता है।

अरहन्त भगवान स्वेदरहित, मलरहित आदि चौंतीस अतिशयगुणों सहित हैं। भगवान के पसीना या मल नहीं होता। तीर्थंकर के तो जन्म से ही निहार नहीं होता। वहाँ परमाणुओं की ऐसी ही योग्यता है कि मल होता ही नहीं। चौंतीस अतिशय गुण कहा; किन्तु वास्तव में वह पुण्य का फल है, गुण तो अन्दर केवलज्ञानादि का प्रकट होना है। जो तीनकाल तीनलोक को एकसमय में जानते हैं – ऐसे अरहन्त भगवान का यह स्वरूप है। ऐसे अरहन्त को पहचानने से अपने आत्मा की पहचान होती है। यह चौंतीस अतिशय पुण्य हैं – गुण नहीं। तीर्थंकर के ऐसा पुण्य होता है, किन्तु उसका अर्थ यह नहीं है कि गुण प्रकट हो तो दूसरे के ऊपर प्रभाव पड़े ही। दूसरे के ऊपर प्रभाव पड़ना यह गुण का फल नहीं है – पुण्य का फल है; गुण का फल आत्मा में आता है। अन्दर शान्ति, वीतरागता, आनन्द, केवलज्ञान वगैरह फल आत्मा में आता है, पुण्य का फल बाहर में आता है।

मुनिराज को अन्दर में विशेष वीतरागी शान्तभाव प्रकट हो गया है। तथापि बाहर में सिंह आकर शरीर को क्षत-विक्षत कर देता है; पुण्य का उदय हो तो भूखा होने पर भी पास नहीं आता। पुनश्च, भगवान के समवशरण में सिंह, हिरन, मूषक, बिलाव साथ-साथ बैठें तथापि वैर-भाव उल्लसित न हो। इसमें मूलकारण तो वहाँ उपस्थित उस-उस जीव की वैसी योग्यता है और निमित्तकारण भगवान का पुण्य है। पुण्य-पाप के विकाररहित चैतन्यस्वभाव में स्थिर होकर अरहन्त होते हैं, अन्य कोई रीति अरहन्त होने की नहीं है। **(क्रमशः)**

डॉ. भारिल्ल के आगामी कार्यक्रम

30 मार्च से 6 अप्रैल	सिंगापुर	शिविर
22 से 24 अप्रैल	उदयपुर (राज.)	कन्या छात्रावास का उद्घाटन
4 से 7 मई	देवलाली	गुरुदेव जयन्ती
8 मई	दिल्ली	उपकार दिवस
15 मई से 1 जून	विदिशा	प्रशिक्षण शिविर
15 जून से 15 जुलाई	विदेश यात्रा	धर्मप्रचारार्थ

ज्ञान गोष्ठी

सायंकालीन तत्त्वचर्चा के समय विभिन्न मुमुक्षुओं द्वारा
पूज्य स्वामीजी से पूछे गये प्रश्न और स्वामीजी द्वारा दिये गये उत्तर

प्रश्न : निश्चयनय कितने प्रकार का कहा जाता है ?

उत्तर : यथार्थ में तो त्रिकाली द्रव्य यही निश्चय है। राग को जब व्यवहार कहना हो, तब निर्मल पर्याय को उससे भिन्न बताना, उसको निश्चय कहा जाता है। कर्म को व्यवहार कहना हो, तब राग को निश्चय कहा जाये। अनुभूति की पर्याय व्यवहार है, तो भी द्रव्य की ओर ढली है; इससे उसको निश्चय कहकर अनुभूति को ही आत्मा कहा है। इसप्रकार अपेक्षा से निश्चयनय के अनेक भेद हो जाते हैं।

प्रश्न : मुक्ति और संसार में अन्तर नहीं है – ऐसा कौन पुरुष कहते हैं ? और किस नय से कहते हैं ?

उत्तर : शुद्धनिश्चयनय से मुक्ति और संसार में अन्तर नहीं है। अहाहा ! कहाँ पूर्णानन्द की प्रगटतारूप मुक्त दशा और कहाँ अनन्त दुःखमय संसारपर्याय ! तथापि उस मुक्ति और संसार में कोई अन्तर नहीं है – ऐसा शुद्धतत्त्व के रसिक पुरुष कहते हैं; क्योंकि संसार भी पर्याय है और मुक्ति भी पर्याय है। यह पर्याय आश्रय करने योग्य नहीं है, इस अपेक्षा से मुक्ति और संसार में अन्तर नहीं है – ऐसा शुद्धतत्त्व के रसिक अनुभवी पुरुष कहते हैं। नियमसार गाथा 50 में कहा है कि शुद्धनिश्चयनय के बल से उदयभाव तो हेय है ही; किन्तु उपशमादि की निर्मल पर्याय भी हेय है। शुद्धनिश्चयनय के बल से चारों भाव – विभावभाव है, हेय हैं – ऐसा कहा है।

प्रश्न : समयसार की टीका करने से मलिनता नाश होती है क्या ?

उत्तर : टीका करने के विकल्प से मलिनता नाश नहीं होती। हाँ, टीका के काल में दृष्टि के बल से अन्तर में एकाग्रता बढ़ती जाती है, उससे मलिनता नाश होती है। तब उपचार करके टीका से मलिनता नाश होती है – ऐसा व्यवहार से कहा है।

प्रश्न : निश्चय श्रुतकेवली किसे कहते हैं ?

उत्तर : जो दर्शन-ज्ञान-चारित्र से आत्मा का अनुभव करता है, वह निश्चय श्रुत केवली है। जिसमें से केवलज्ञान प्रकट होनेवाला है – ऐसे आत्मा को जिसने स्वानुभव से जाना, वह परमार्थ से श्रुतकेवली है। उसको अल्पकाल में केवलज्ञान अवश्य होनेवाला है; इसलिये उसे परमार्थ से श्रुतकेवली कहा है। तथा इस आत्मा को

जाननेवाली जो श्रुतज्ञान की पर्याय है, जिसमें **ज्ञान सो आत्मा** ऐसा भेद पड़ता है; उस ज्ञान पर्याय को व्यवहार श्रुतकेवली कहा है। जो ज्ञान पर्याय सर्व को जानती है, वह स्वपर की ज्ञायक ज्ञानपर्याय सर्वश्रुत ज्ञान है – उसको व्यवहार श्रुतकेवली कहते हैं।

प्रश्न : आस्रव व्यवहार से ज्ञेय कब हो ?

उत्तर : आस्रवभाव अशुचिरूप हैं और आत्मा पवित्र है। आस्रव का अंश भी स्वभाव को रोकता है; इसलिये वह आत्मा के स्वभाव से विपरीत है। आत्मस्वभाव तो स्व-पर का ज्ञाता है; अत: आत्मा चेतन स्वभावी है और आस्रव स्वयं कुछ नहीं जानते; इसलिये वे जड़ स्वभावी हैं। आस्रव तो अन्य के द्वारा ज्ञेय होनेयोग्य हैं।

यहाँ **आस्रव अन्य के द्वारा ज्ञेय होनेयोग्य हैं** – ऐसा कहकर आस्रवों को आत्मा का व्यवहार से ज्ञेयत्व सिद्ध किया है। वे आस्रव वास्तव में व्यवहार से ज्ञेय कब हों ? जब आत्मा आस्रवों से भिन्न अपने स्वभाव को जानकर, आस्रवों से विमुख होकर, स्वभाव की ओर बढ़े; तब उसकी स्व-पर प्रकाशक शक्ति प्रकट हो और तब वह आस्रवों से अपने को भिन्न जानें अर्थात् वे आस्रव पर ज्ञेय हो जावें, व्यवहार से ज्ञेय हो जावें।

आस्रव मैं हूँ ऐसी पर्याय बुद्धि से स्व-पर प्रकाशक ज्ञान शक्ति विकसित नहीं होती अर्थात् आस्रव व्यवहार से ज्ञेय नहीं होते। आस्रवों से भिन्न हुये बिना आस्रवों को व्यवहार से ज्ञेय करेगा कौन ? जिसने परमार्थ ज्ञेयरूप से आत्मा को लक्ष में लिया है, वही आस्रवों को व्यवहार से ज्ञेयरूप जानता है।

प्रश्न : द्रव्यार्थिकनय और पर्यायार्थिक नय किसको जानते हैं ? इनका स्वरूप क्या है ?

उत्तर : त्रिकाली स्वभाव को देखनेवाली दृष्टि द्रव्यदृष्टि है और वर्तमान पर्याय को देखनेवाली दृष्टि पर्यायदृष्टि है। जो त्रिकाली द्रव्यस्वभाव को जाने, अपना कहे वह द्रव्यार्थिकनय है। उसमें त्रिकालीस्वभाव को जाननेवाला ज्ञान तो अंतरंग नय (अर्थनय अथवा भावनय) है और उसको कहनेवाला वचन बहिर्नय (वचनात्मक अर्थात् शब्दनय) कहा जाता है। जो ज्ञान वर्तमान पर्याय को जानता है, उस ज्ञान को या उसके कहने वाले वचन को पर्यायार्थिकनय कहते हैं। उसमें पर्याय को जानने वाला ज्ञान अंतरंग नय है और उसको कहनेवाला वचन बहिर्नय है।

सिद्धदशा को जानने वाला ज्ञान पर्यायार्थिकनय है; परन्तु सिद्धदशा प्रगट करने का उपाय पर्यायदृष्टि नहीं है। द्रव्यदृष्टि ही सिद्धदशा प्रगट करने का उपाय है; फिर भी जो सिद्धदशा प्रगट होती है, उसे जाननेवाला तो पर्यायार्थिकनय ही है।

श्री टोडरमल दि. जैन सिद्धांत महाविद्यालय में 35वें बैच के छात्रों का–

दीक्षांत समारोह संपन्न

जयपुर (राज.) : ज्ञानतीर्थ श्री टोडरमल स्मारक भवन में दिनांक 7 फरवरी को श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धांत महाविद्यालय के 35वें बैच के शास्त्री तृतीय वर्ष के 35 छात्रों का विदाई समारोह संपन्न हुआ।

इस प्रसंग पर प्रात: पंचतीर्थ जिनालय पर भगवान आदिनाथ के मोक्ष कल्याणक महोत्सव के अवसर पर विशेष जिनेन्द्र पूजन और रात्रि में भव्य जिनेन्द्र भक्ति का आयोजन किया गया।

शास्त्री द्वितीय वर्ष के विद्यार्थियों द्वारा पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट के 50वें वर्ष में पदार्पण को लक्ष्य में रखकर हॉल की सजावट की गई थी। इसमें डॉ. भारिल्ल द्वारा लिखित सभी ग्रन्थों की प्रदर्शनी तथा उनके जीवन को प्रदर्शित करने वाले संस्मरणों को झांकी के रूप में प्रदर्शित किया गया था।

कार्यक्रम दो सत्रों में संपन्न हुआ। प्रथम सत्र के अध्यक्ष पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल तथा मुख्य अतिथि श्री सुशीलजी गोदीका एवं द्वितीय सत्र के अध्यक्ष तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल एवं मुख्य अतिथि पण्डित शान्तिकुमारजी पाटील थे। सभा में विशिष्ट अतिथि के रूप में डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर, पण्डित परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल, डॉ. दीपकजी जैन, पण्डित पीयूषजी शास्त्री, श्री कैलाशचंदजी सेठी, श्री अशोकजी वैभव छिन्दवाड़ा, पण्डित सुनीलजी शास्त्री प्रतापगढ, पण्डित श्रीमंतजी नेज, पण्डित प्रमोदजी शास्त्री शाहगढ, पण्डित उदयजी शास्त्री, पण्डित अनिलजी शास्त्री, पण्डित गोम्मटेशजी शास्त्री, पण्डित जिनकुमारजी शास्त्री, श्रीमती कमला भारिल्ल, श्रीमती गुणमाला भारिल्ल एवं विदुषी प्रतीति पाटील आदि महानुभाव मंचासीन थे।

कार्यक्रम में शास्त्री तृतीय वर्ष के सभी विद्यार्थियों ने अपने अनुभव सुनाते हुए महाविद्यालय को वर्तमान परिप्रेक्ष्य में विद्या अध्ययन का सर्वश्रेष्ठ केन्द्र तथा महाविद्यालय में व्यतीत अपने पांच वर्ष को अपना स्वर्ण काल बताते हुये स्वयं को सौभाग्यशाली बताया। साथ ही सभी विद्यार्थियों ने जीवनपर्यंत स्वाध्याय एवं तत्त्वप्रचार का संकल्प भी लिया।

महाविद्यालय के प्राचार्य पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल ने अपने उद्‌बोधन में कहा कि जिनवाणी को पढकर, पढाकर अपने जीवन में उतारना ही वास्तविक लाभ है। यही मुक्ति प्राप्ति का साधन है। ब्र. यशपालजी ने सदैव अनुशासन प्रिय व उत्साही बने रहने की प्रेरणा देते हुये कहा कि जीवन में औपचारिकता को बढावा न देते हुये मूल कार्य पर ध्यान देना चाहिये। पण्डित शांतिकुमारजी ने कहा कि धन्य हैं वे लोग जिन्हें जिनवाणी का बोध प्राप्त हुआ है, उनसे भी धन्य वे लोग हैं जो जिनवाणी के निमित्त से अपने स्वभाव का आश्रय लेकर धर्मरूप परिणत होते हैं। आपकी पहली धन्यता तो हो गई है, दूसरी धन्यता भी जीवन में शीघ्र प्रगट हो। डॉ. संजीवकुमारजी गोधा ने मार्गदर्शन एवं मंगल आशीर्वाद देते हुये कहा कि अध्ययन की गंभीरता व निरंतर स्वाध्याय से ही विद्वत्ता बनती है, अत: जीवन में प्रतिज्ञाबद्ध होकर स्वाध्याय करें तथा जिस विषय को हमने पढा हो, उसे पढाने से और गहराई एवं गंभीरता आती है। श्री परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल ने कहा कि अपना विजन आपके जीवन का सबसे महत्वपूर्ण पड़ाव है; क्योंकि आज तक आप एक अतिसंरक्षित माहौल में रह रहे हैं और अब कल से आपको खुले आकाश की चुनौतियों से रूबरू होना है।

अध्यक्षीय उद्‌बोधन में डॉ. भारिल्ल ने कहा कि मुझे अपने विद्यार्थियों के तत्त्व संबंधी रुचि में रंचमात्र भी शंका नहीं है। तत्त्वअध्ययन अध्यापन युक्त जीवन में विवेक तथा सहिष्णुता से ही कार्य संभव है। यदि परिस्थिति विपरीत बने तो उसमें उलझने की बजाय शांत रहना ही सुलझने का मार्ग है। शास्त्री द्वितीय वर्ष के छात्रों ने दादाद्वय के हाथों से स्वर्णजयंती वर्ष के प्रारंभ प्रसंग पर धर्मचक्र को स्वीकार करते हुये आजीवन जिनवाणी के प्रचार-प्रसार की प्रतिज्ञा की।

अंत में शास्त्री तृतीय वर्ष के सभी छात्रों को फोटो, श्रीफल और डॉ. भारिल्ल व पण्डित रतनंचदजी भारिल्ल के अभिनन्दन-ग्रन्थ भेंटकर सम्मानित किया गया।

तिलोयपण्णत्ति का कन्नड अनुवाद संपन्न

श्रवणबेलगोला (कर्नाटक) : यहाँ चामुण्डराय मंडप में आचार्य यतिवृषभ विरचित 'तिलोयपन्नत्ति' नामक प्राकृत ग्रंथ के हिन्दी अनुवाद का लोकार्पण स्वस्ति श्री चारुकीर्ति भट्टारक स्वामी द्वारा हुआ। इस ग्रंथ की हिन्दी टीका का कन्नड अनुवाद टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धांत महाविद्यालय के स्नातक श्री बाहुबली भोसगे धारवाड़ ने किया है।

इस अवसर पर ग्रंथ की भव्य शोभायात्रा निकाली गई, जिसमें हजारों की संख्या में जिनवाणी श्रुतभक्त मुमुक्षुओं ने भाग लिया। कार्यक्रम में समस्त भट्टारक उपस्थित थे। इस प्रसंग पर अनुवादक श्री बाहुबली भोसगे एवं प्रधान संपादक प्रो. एम.ए. जयचंद्रजी मैसूर को स्वस्ति श्री चारुकीर्ति भट्टारक स्वामी ने सम्मानित किया।

यह ग्रंथ तीन भागों में शीघ्र ही प्रकाशित हो रहा है, अभी पहला भाग ही प्रकाशित हुआ है। अब यह ग्रंथ कन्नड के पाठकों के लिये उपलब्ध होगा। इच्छुक पाठक **संपर्क करें –** धवलतीर्थम्, राष्ट्रीय प्राकृत अध्ययन और संशोधना केन्द्र, श्रवणबेलगोला – 573135 (कर्नाटक) फोन नं. 08277534868

भक्तामर विधान संपन्न

रायपुर (छत्तीसगढ.) : यहाँ मालवीय रोड़ स्थित श्री दिगम्बर जैन बड़ा मंदिर में दिनांक 10 जनवरी 2016 को भक्तामर विधान का आयोजन किया गया। इस अवसर पर ब्र. श्रेणिकजी जबलपुर द्वारा ग्रन्थाधिराज समयसार पर प्रवचन का लाभ मिला। विधान का आयोजन श्री अरविन्दजी बटाबिया परिवार रायपुर द्वारा किया गया।

पञ्चकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव संपन्न

गुना (म.प्र.) : यहाँ श्री 1008 सीमंधर कुन्दकुन्द कहान दिगम्बर मंदिर ट्रस्ट गुना के अन्तर्गत पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट जयपुर एवं मुमुक्षु मण्डल गुना के संयुक्त तत्त्वावधान में श्री 1008 महावीर दिगम्बर जिनबिम्ब पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव शुक्रवार, दिनाँक 12 फरवरी से बुधवार 17 फरवरी 2016 तक अनेक विशिष्ट कार्यक्रमों सहित सानंद सम्पन्न हुआ।

महोत्सव में आध्यात्मिकसत्पुरुष श्रीकानजीस्वामी के सी.डी. प्रवचनों के अतिरिक्त पण्डित ज्ञानचंदजी विदिशा, डॉ. उत्तमचंदजी सिवनी, डॉ. विनोदजी चिन्मय, पण्डित मुकेशजी तन्मय, डॉ. राकेशजी नागपुर, पण्डित शांतिकुमारजी पाटील जयपुर इत्यादि अनेक विद्वानों का सानिध्य प्राप्त हुआ।

पञ्चकल्याणक की सम्पूर्ण प्रतिष्ठा-विधि प्रतिष्ठाचार्य ब्र. अभिनन्दनकुमारजी शास्त्री खनियांधाना द्वारा सह-प्रतिष्ठाचार्य पण्डित विरागजी शास्त्री जबलपुर, पण्डित विवेकजी इन्दौर, पण्डित अंकितजी शास्त्री लूणदा, पण्डित सुकुमाल झांझरी, पण्डित कांतिकुमारजी इन्दौर, पण्डित रमेशजी सनावद के सानिध्य में शुद्ध तेरापंथ आम्नायानुसार संपन्न हुई।

बालक वर्धमान के माता-पिता बनने का सौभाग्य श्रीमती संतोषनी-सुभाषजी सर्राफ विदिशा को प्राप्त हुआ। महोत्सव के सौधर्म इन्द्र-इन्द्राणी इंजी अर्पण-कृति जैन बंधु गुना, कुबेर इन्द्र-इन्द्राणी श्री पंकज-निधि जैन इन्दौर एवं महायज्ञनायक-नायिका इंजी सचिन-सुयशी जैन बंधु गुना थे। यागमंडल विधान का उद्घाटन जैन जागृति महिला मंडल गुना, प्रतिष्ठा मंच का उद्घाटन श्री सुनीलकुमारजी शुभमजी भोपाल एवं प्रतिष्ठा मण्डप का उद्घाटन श्री अशोककुमारजी अनुरागजी गंजबासौदावाले गुना परिवार ने किया। महोत्सव का ध्वजारोहण श्री निहालचंदजी जैन पीतल फैक्ट्री जयपुर के करकमलों द्वारा किया गया।

बाल तीर्थंकर का सर्वप्रथम अभिषेक करने का सौभाग्य श्री शांतिलालजी जैन अलवरवाले जयपुर को मिला। सर्वप्रथम पालना झूलन श्रीमती कुसुम-प्रदीपजी चौधरी किशनगढ ने किया। सर्वप्रथम आहारदान का सौभाग्य श्री प्रेमचंद ध्याता बजाज कोटा व श्री दिनेशजी अखिलेशजी सिंघई चेतन ट्राउजर इन्दौर को प्राप्त हुआ।

इस महोत्सव में सीमंधर आदि 20 तीर्थंकर भगवान एवं पंच बालयति भगवान की प्रतिमाओं की प्राण प्रतिष्ठा की गई। संपूर्ण महोत्सव में पूजन, प्रवचन, आध्यात्मिक गोष्ठियों, बालकक्षाओं, भक्ति एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों की धूम मची रही। संपूर्ण कार्यक्रम में कोलकाता, राजकोट, मुम्बई, विदिशा, ग्वालियर, भोपाल, सागर, शिवपुरी आदि स्थानों से लगभग 5 हजार साधर्मियों ने पधारकर धर्मलाभ लिया।

कार्यक्रमों का मंच संचालन पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली एवं पण्डित धर्मेन्द्रजी शास्त्री कोटा द्वारा तथा महोत्सव का निर्देशन पण्डित राजकुमारजी शास्त्री गुना द्वारा हुआ। ●

मुलायमसिंह यादव सम्मानित

मंगलायतन-अलीगढ (उ.प्र.) : यहाँ स्थित दिल्ली पब्लिक स्कूल में दिनांक 18 फरवरी को समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री मुलायमसिंहजी यादव का सम्मान समारोह आयोजित किया गया।

समारोह का आयोजन श्री मुलायमसिंहजी यादव हेतु किया गया था, किन्तु किसी कारणवश वे उपस्थित नहीं हो सके। उनके स्थान पर उनके सुपुत्र व उ.प्र. के मुख्यमंत्री श्री अखिलेशजी यादव उपस्थित हुये और सम्मान ग्रहण किया।

अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर आयोजित इस सम्मान समारोह में देश-विदेश की जैन समाज के हजारों प्रतिष्ठित जैन विद्वान, उद्योगपति व अन्य सामाजिक एवं धार्मिक संस्थाओं के प्रमुखों ने उनका अभिनन्दन किया। ज्ञातव्य है कि श्री मुलायमसिंहजी ने अपने कार्यकाल के दौरान जैन समाज को उत्तरप्रदेश में सर्वप्रथम अल्पसंख्यक घोषित किया था व केन्द्रीय स्तर पर इसमें अहम भूमिका निभाई थी। इसी कारण पूरे भारतवर्ष व अन्तरराष्ट्रीय स्तर की अनेक शीर्षस्थ जैन संस्थाओं की ओर से इनका सम्मान समारोह किया गया।

अभिनन्दन समारोह में अखिल भारतीय दिगम्बर जैन विद्वत्परिषद् के अध्यक्ष एवं मंगलायतन विश्वविद्यालय के जैनदर्शन विभाग के डीन डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल जयपुर, भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासमिति के अध्यक्ष श्री अशोकजी बड़जात्या इन्दौर, प्रसिद्ध उद्योगपति श्री अजितप्रसादजी जैन दिल्ली, श्री आदीशजी जैन दिल्ली, श्री अजितजी जैन बड़ौदा, तीर्थधाम चिदायतन हस्तिनापुर के उपाध्यक्ष श्री जे.के. जैन शामली, आत्मार्थी ट्रस्ट के अध्यक्ष श्री विमलकुमारजी नीरु केमिकल्स दिल्ली, श्री जीवेन्द्र जैन गाजियाबाद, श्री आर.के. जैन देहरादून, डॉ. अरुणजी जैन (प्राचार्य-दौसा संस्कृत कॉलेज), श्री रविकुमारजी करहल, डॉ. योगेशजी जैन, श्री आलोकजी जैन कानपुर, श्री राकेशजी खेकड़ा, श्री अनिलजी बुलन्दशहर, श्री हैप्पी जैन इटावा के अतिरिक्त विभिन्न राष्ट्रीय व अन्तरराष्ट्रीय संगठनों के प्रमुखों एवं अनेक प्रतिष्ठितजनों द्वारा कई समूहों में अभिनन्दन किया गया।

तीर्थधाम मंगलायतन व दिल्ली पब्लिक स्कूल के संरक्षक श्री पवनजी जैन ने श्री मुलायमसिंहजी का परोक्षरूप से अभिवादन किया।

प्रथम वार्षिकोत्सव संपन्न

नागपुर (महा.) : यहाँ श्री महावीर स्वामी जिनालय में श्री पंचबालयति जिनवेदी के पंचकल्याणक की प्रथम वर्षगांठ पर दिनांक 12 से 17 जनवरी तक पंच बालयतियों के पांच विधानों का आयोजन हुआ।

इस अवसर पर गुरुदेवश्री के सी.डी. प्रवचनों के अलावा पण्डित सुबोधजी सिंघई सिवनी, डॉ. राकेशजी शास्त्री नागपुर, पण्डित विपिनजी शास्त्री नागपुर एवं स्थानीय विद्वानों का लाभ मिला। विधि-विधान के कार्य ब्र. जतीशचंदजी शास्त्री के निर्देशन में पण्डित सुबोधजी शास्त्री शाहगढ, पण्डित अशोकजी उज्जैन एवं विद्या निकेतन के विद्यार्थियों के सहयोग से पूर्ण हुये।

समयसार शिविर एवं समयसार विधान संपन्न

सिद्धायतन-द्रोणगिरि (म.प्र.) : यहाँ सिद्धायतन के 8 वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में दिनांक 3 से 10 फरवरी को देश में प्रथम बार संपूर्ण समयसार मंडल विधान का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर ग्रन्थाधिराज समयसार पर ब्र. सुमतप्रकाशजी खनियांधाना द्वारा परिशिष्ट पर, पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली द्वारा कर्ताकर्म अधिकार व सर्वविशुद्धज्ञान अधिकार पर एवं डॉ. राकेशजी शास्त्री नागपुर द्वारा शेष समयसार पर प्रवचनों का लाभ प्राप्त हुआ। प्रात:कालीन व्याख्यानमाला में क्रमश: पण्डित शुभमजी शास्त्री सिद्धायतन, ब्र. चंद्रेशजी शिवपुरी, ब्र. नन्हे भैया सागर, पण्डित निखिलजी मुम्बई, पण्डित रूपचंद्रजी बण्डा, पण्डित गुलाबचंदजी बीना एवं पण्डित जिनेशजी शास्त्री मुम्बई द्वारा व्याख्यान हुये। इसके अतिरिक्त पण्डित कोमलचंदजी टडा, पण्डित विरागजी जबलपुर व पण्डित सुरेशचंदजी पिपरा आदि विद्वानों का भी समागम प्राप्त हुआ।

कार्यक्रम का शुभारंभ मंगलकलश शोभायात्रा से हुआ। ध्वजारोहण श्री विजयभाई शाह एवं शांतिभाई शाह दादर मुम्बई द्वारा हुआ। शिविर उद्घाटनकर्ता श्री अशोकजी चाणेकर एवं विधान उद्घाटनकर्ता पण्डित सिद्धार्थजी दोशी रतलाम थे। मुख्य अतिथि श्री दिलीपभाई मुम्बई थे। शिविर आमंत्रणकर्ता श्री जयकुमारजी शेटे देवलाली व डॉ. वासंतीबेन शाह मुम्बई एवं विधान आमंत्रणकर्ता डॉ. वासंतीबेन शाह मुम्बई थी। शिविर में लगभग 400 साधर्मियों ने धर्मलाभ लिया। आगामी 9 से 11 अप्रैल तक नवनिर्मित धार्मिक गाथा निलय का लोकार्पण किया जायेगा। समापन के अवसर पर ट्रस्ट कमेटी ने सभी विद्वानों का सम्मान किया तथा आभार प्रदर्शन ट्रस्ट के अध्यक्ष श्री चंद्रभानजी जैन ने किया। **– प्रद्युम्न फौजदार**

द्वितीय वार्षिकोत्सव संपन्न

भोपाल (म.प्र.) : यहाँ मुमुक्षु मण्डल के माध्यम से रतनलाल सौगानी ट्रस्ट द्वारा श्री महावीर स्वामी समवशरण जिनमंदिर की वेदी प्रतिष्ठा का द्वितीय वार्षिकोत्सव दिनांक 8 से 10 जनवरी तक श्री भक्तामर महामंडल विधान सहित सानन्द संपन्न हुआ।

इस अवसर पर गुरुदेवश्री के सी.डी. प्रवचनों के अतिरिक्त पण्डित राजेन्द्रकुमारजी जबलपुर द्वारा तीनों समय प्रवचनों का लाभ मिला। कार्यक्रम में दिल्ली, अहमदाबाद, हैदराबाद, इन्दौर, छिन्दवाड़ा, विदिशा आदि अनेक स्थानों से लगभग 700 साधर्मियों ने धर्मलाभ लिया।

विधि-विधान के समस्त कार्य ब्र. जतीशचंदजी शास्त्री के निर्देशन में पण्डित सुबोधजी शास्त्री शाहगढ एवं पण्डित अशोकजी उज्जैन द्वारा कराये गये।

भोपाल-विदिशा मार्ग पर दीवानगंज में निर्माणाधीन ज्ञानोदय तीर्थ में -

वेदी शिलान्यास संपन्न

भोपाल (म.प्र.) : यहाँ भोपाल-विदिशा मार्ग पर दीवानगंज में निर्माणाधीन ज्ञानोदय तीर्थ में दिनांक 30 व 31 जनवरी, 2016 को वेदी शिलान्यास का कार्यक्रम संपन्न हुआ।

इस अवसर पर तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल जयपुर एवं पण्डित विमलचंदजी झांझरी उज्जैन के प्रवचनों का लाभ मिला।

कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री जे.के. जैन (रायसेन कलेक्टर) ने की। मुख्य अतिथि के रूप में श्री विमलकुमारजी श्रीमती कुसुमजी नीरु कैमिकल्स दिल्ली एवं विशिष्ट अतिथि के रूप में विद्वत्गणों के अतिरिक्त श्री अशोकजी बड़जात्या इन्दौर (राष्ट्रीय अध्यक्ष-महासमिति), श्री अजितजी बड़ौदा, श्री महिपालजी बांसवाड़ा, श्री गुलाबचंदजी सुभाष ट्रांसपोर्ट सागर, श्री राजेशजी जैन (कलेक्टर गुना), श्री विजयजी बड़जात्या इन्दौर, श्री पदमजी पहाड़िया इन्दौर, श्री सुशीलजी काला इन्दौर, श्री सुखदयालजी देवड़िया केसली, श्री सुनीलकुमार संजयकुमारजी सर्राफ सागर उपस्थित थे। कार्यक्रम का ध्वजारोहण श्री सुनीलजी जैन 501 भोपाल द्वारा हुआ।

महोत्सव में शिखर शिलान्यास श्री विमलकुमारजी श्रीमती कुसुमजी नीरु केमिकल्स दिल्ली द्वारा संपन्न हुआ। इसके अतिरिक्त सुदर्शन मेरु का शिलान्यास श्री गुलाबचंद सुभाषचंद अशोककुमार सुधीरकुमार सुभाष ट्रांसपोर्ट परिवार सागर ने, अचल मेरु का शिलान्यास श्री अशोकजी विजयजी बड़जात्या इन्दौर ने, मंदरमेरु का शिलान्यास श्री महेन्द्र-किरण चौधरी भोपाल व श्री अजितकुमार संजयकुमार राकेशकुमार मोदी परिवार ने एवं विद्युन्माली मेरु का शिलान्यास श्री सुनीलकुमार संजयकुमारजी सर्राफ सागर व श्री राजेन्द्रकुमार अशोककुमार नरेन्द्र कुमार मोदी परिवार ने किया।

इस अवसर पर इन्दौर, उज्जैन, बड़नगर, सागर, जबलपुर, कोरबा, कटनी, खंडवा, सनावद, अशोकनगर, छिन्दवाड़ा, टीकमगढ, रतलाम, मुम्बई, नागपुर, गुड़गांव, बड़ौदा, विदिशा, गंजबासौदा, बांसवाड़ा, भोपाल आदि स्थानों से लगभग 2 हजार साधर्मियों ने धर्मलाभ लिया।

विधि-विधान के समस्त कार्य ब्र. जतीशचंदजी शास्त्री दिल्ली के निर्देशन में पूर्ण हुये।

आध्यात्मिक शिक्षण शिविर संपन्न

अभाना-दमोह (म.प्र.) : यहाँ मुमुक्षु मण्डल द्वारा प्रथम बार आध्यात्मिक शिक्षण शिविर एवं सिद्धचक्र मंडल विधान का आयोजन दिनांक 19 से 26 जनवरी तक किया गया।

इस अवसर पर गुरुदेवश्री के सी.डी. प्रवचनों के अतिरिक्त पण्डित राजेन्द्रजी जबलपुर, पण्डित अनिलजी शास्त्री भिण्ड एवं ब्र. नन्हे भैया सागर के प्रवचनों का लाभ मिला।

शिविर में आसपास के स्थानों से लगभग 500 साधर्मियों ने धर्मलाभ लिया।

विधि-विधान के समस्त कार्य ब्र. जतीशचंदजी शास्त्री के निर्देशन में पण्डित सुबोधजी शास्त्री शाहगढ, पण्डित अशोकजी उज्जैन तथा स्थानीय विद्वान पण्डित मनोजी शास्त्री, पण्डित श्रेयांसजी शास्त्री, पण्डित शशांकजी शास्त्री द्वारा कराये गये।

आध्यात्मिक शिक्षण शिविर संपन्न

ध्रुवधाम-बांसवाड़ा (राज.) : यहाँ पंचकल्याणक की नौवीं वर्षगांठ के अवसर पर दिनांक 6 से 10 जनवरी 2016 तक आध्यात्मिक शिक्षण शिविर का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर प्रात: नित्यनियम पूजन, गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के वीडियो प्रवचन, प्रश्नमंच तथा सायंकाल जिनेन्द्र भक्ति के अतिरिक्त पण्डित रजनीभाई दोशी द्वारा प्रात: व दोपहर समयसार पर एवं सायंकाल मोक्षमार्गप्रकाशक पर प्रवचनों का लाभ मिला। साथ ही पण्डित नीलेशभाई मेहता द्वारा प्रात: समयसार एवं सायंकाल मोक्षमार्गप्रकाशक पर प्रवचन हुये। इसके अतिरिक्त प्रात: प्रवचनोपरान्त पण्डित प्रवीणजी शास्त्री द्वारा जैन सिद्धांत प्रवेशिका पर तथा सायंकाल गुणस्थान विवेचन पर कक्षा ली गई। शिविर के अंतिम दो दिन पण्डित राजकुमारजी शास्त्री उदयपुर द्वारा भी प्रवचन हुये।

शिविर का शुभारंभ सभा के मुख्य अतिथि श्री बी.डी. जैन परिवार द्वारा ध्वजारोहण से हुआ। शिविर का उद्घाटन सभा के अध्यक्ष श्री विजयजी बड़जात्या परिवार इन्दौर द्वारा हुआ। मंच पर विशिष्ट अतिथियों के रूप में पण्डित रजनीभाई दोशी हिम्मतनगर, पण्डित नीलेशभाई मुम्बई, पण्डित मांगीलालजी, श्री जवेरचंदजी हताया, श्री देवीलालजी, श्री नवीनभाई मेहता, श्री भरतभाई लाखाणी, श्री योगेशजी जैन मुम्बई, श्री किरणभाई गाला, डॉ. उमेशजी संघोई एवं श्री सुनीलजी जैन वाशिम मंचासीन थे। स्वागत भाषण श्री महीपालजी ज्ञायक ने दिया। सभा का संचालन पण्डित प्रवीणजी शास्त्री ने किया।

प्रतिदिन दोपहर में छात्र विद्वान प्रवचन के उपरांत विविध विषयों पर संगोष्ठी का आयोजन हुआ। प्रथम दिन श्रद्धा-भक्ति व वैराग्य, द्वितीय दिन देव-शास्त्र-गुरु, तृतीय दिन निमित्तोपादान एवं चतुर्थ दिन सम्यग्दर्शन-सम्यग्ज्ञान-सम्यक् चारित्र विषय पर ध्रुवधाम के विद्यार्थियों ने अपने वक्तव्य प्रस्तुत किये। गोष्ठी की अध्यक्षता क्रमश: पण्डित नीलेशभाई मुम्बई, पण्डित मांगीलालजी मुम्बई, पण्डित चंदुभाई बांसवाड़ा एवं श्री मीठालालजी कलिंजरा ने की तथा मंगलाचरण शिखर जैन, विपिन जैन एवं जीवेश जैन ने किया।

सभी गोष्ठियों का संयोजन एवं संचालन पण्डित रीतेशजी शास्त्री बांसवाड़ा ने किया।

अंतिम दिन समापन समारोह में ट्रस्ट के अध्यक्ष श्री महीपालजी ज्ञायक ने सभी का आभार व्यक्त किया।

पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के समस्त ऑडियो - वीडियो प्रवचन साहित्य एवं अन्य अनेक जानकारियों के लिये अवश्य देखें -
वेबसाईट - www.vitragvani.com
संपर्क सूत्र-श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, मुम्बई
Ph.: 022-26130820, 26104912, E-Mail- info@vitragvani.com

साप्ताहिक गोष्ठियाँ संपन्न

जयपुर (राज.) : (1) यहाँ टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धान्त महाविद्यालय द्वारा होने वाली गोष्ठियों की शृंखला में दिनांक 17 जनवरी को 'ज्ञानेन पुंसां सकलार्थसिद्धि' विषय पर एक गोष्ठी का आयोजन किया गया, जिसकी अध्यक्षता पण्डित जिनकुमारजी शास्त्री ने की।

श्रेष्ठ वक्ता के रूप में अनुभव जैन (उपाध्याय वरिष्ठ) एवं रविन्द्र जैन (उपाध्याय कनिष्ठ) रहे। गोष्ठी का मंगलाचरण सिद्धांत शेट्टी (उपाध्याय कनिष्ठ) ने तथा संचालन शास्त्री तृतीय वर्ष के अंकित जैन एवं ऋषभ जैन 'सम्यक्' ने किया। आभार प्रदर्शन पण्डित उदयजी चौगुले ने किया।

(2) दिनांक 24 जनवरी को 'चारित्तं खलु धम्मो' विषय पर एक गोष्ठी का आयोजन किया गया, जिसकी अध्यक्षता पण्डित अनेकान्तजी भारिल्ल ने की।

श्रेष्ठ वक्ता के रूप में सन्मति जैन (उपाध्याय वरिष्ठ) एवं नमन जैन (शास्त्री प्रथम वर्ष) रहे। गोष्ठी का मंगलाचरण निखिल जैन (उपाध्याय कनिष्ठ) ने तथा संचालन शास्त्री तृतीय वर्ष की अनुभूति जैन एवं निधि जैन ने किया। आभार प्रदर्शन पण्डित उदयजी शास्त्री ने किया।

(3) दिनांक 27 जनवरी को 'जैन न्याय की प्रारंभिक भूमिका' विषय पर एक गोष्ठी का आयोजन किया गया, जिसकी अध्यक्षता पण्डित पीयूषजी शास्त्री ने की।

श्रेष्ठ वक्ता के रूप में वर्षा जैन (उपाध्याय वरिष्ठ) एवं संयम देशमाने (उपाध्याय कनिष्ठ) रहे। गोष्ठी का मंगलाचरण साहिल जैन (उपाध्याय कनिष्ठ) ने तथा संचालन शास्त्री तृतीय वर्ष के वैभव जैन एवं संचित जैन ने किया। आभार प्रदर्शन पण्डित जिनकुमारजी शास्त्री ने किया।

(4) दिनांक 10 फरवरी को 'जिनागम के आलोक में नय' विषय पर एक गोष्ठी का आयोजन किया गया, जिसकी अध्यक्षता डॉ. संजीवकुमारजी गोधा ने की।

श्रेष्ठ वक्ता प्रशांत पाटील (शास्त्री द्वितीय वर्ष) एवं अनुभूति जैन (शास्त्री तृतीय वर्ष) रहे। गोष्ठी का मंगलाचरण जी. जगदीशन (उपाध्याय कनिष्ठ) ने तथा संचालन शास्त्री तृतीय वर्ष के अक्षय जैन एवं विकास जैन ने किया। आभार प्रदर्शन पण्डित गोमटेशजी चौगुले ने किया।

सभी गोष्ठियों का संयोजन शास्त्री तृतीय वर्ष के अच्युतकांत जैन, सौरभ फूप ने किया।

महिला शिविर संपन्न

मुम्बई : यहाँ घाटकोपर (ईस्ट) में दिगम्बर जैन महिला समाज द्वारा दिनांक 24 से 26 जनवरी तक प्रथम बार महिला शिविर का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर अल्पना भारिल्ल मुम्बई, स्वानुभूति जैन मुम्बई, कु. जिनल देवलाली एवं ब्र. वासंतीबेन देवलाली द्वारा प्रतिदिन तीन समय छहढाला, चारित्तं खलु धम्मो, आत्मानुभूति की प्रक्रिया आदि विभिन्न विषयों पर प्रवचन व कक्षाओं का लाभ मिला। जिनेन्द्र-भक्ति का भी आयोजन हुआ।

शिविर में लगभग 150 महिलाओं ने धर्मलाभ लिया।

तृतीय वार्षिकोत्सव एवं वेदी शिलान्यास संपन्न

तीर्थधाम आदीश्वरम्-चन्देरी (म.प्र.) : यहाँ दिनांक 2 व 3 फरवरी को तृतीय वार्षिकोत्सव, श्री यागमंडल विधान, विमानोत्सव, श्रीजी विराजमान, मस्तकाभिषेक, वेदी शिलान्यास व विभिन्न उद्घाटन कार्यक्रम सानन्द संपन्न हुये।

इस अवसर पर पण्डित शांतिकुमारजी पाटील जयपुर के प्रवचन का लाभ प्राप्त हुआ।

दिनांक 2 फरवरी को ध्वजारोहण, यागमंडल विधानपूर्वक छत्र-चंवर-भामंडल-कलश-कमलासन की शुद्धि, शोभायात्रा, चौबीसी धर्मशाला में श्रीजी का अभिषेक एवं रात्रि में श्रीमती परिणति शास्त्री विदिशा व कु. प्रतीति शास्त्री जयपुर द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित हुये।

दिनांक 3 फरवरी को नौ वेदियों की शुद्धिपूर्वक श्रीजी विराजमान किये गये एवं भगवान ऋषभदेव का महामस्तकाभिषेक किया गया। नवीन वेदी का शिलान्यास श्री महेन्द्रकुमार अखिलकुमार बंसल परिवार द्वारा विधि-विधानपूर्वक संपन्न हुआ।

दोपहर में समन्वयवाणी फाउण्डेशन जयपुर द्वारा Aaशा एसोसियेशन की राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष श्रीमती सरोज पाटनी को अहिंसा मित्र एवं चन्देरी के वयोवृद्ध मनीषी श्री कुन्दनलालजी भारतीय को चन्देरी गौरव अवार्ड से सम्मानित किया गया।

इस अवसर पर श्री गोपालजी पाटनी पटना, श्री राकेशजी जैन मेरठ, श्री शैलेन्द्रजी जैन अलीगढ (अध्यक्ष-उत्तरांचल तीर्थक्षेत्र कमेटी), श्री प्रवीणजी जैन झांसी (सं. दैनिक विश्व परिवार), श्री सुमतकुमारजी लुहाड़िया सासनी, श्री अनिलजी जैन गाजियाबाद, श्री सुभाषजी जैन जबलपुर, मडावरा से श्री डी.के. सराफ व डॉ. शिखरचंदजी सिलोनिया, दिल्ली से अल्पसंख्यक आयोग के डिप्टी सेकेट्री श्री संदीपजी जैन व श्री विमलकुमारजी जैन के साथ ही स्थानीय जैन पंचायत के अध्यक्ष श्री आनन्दजी रोकड़िया, तीर्थधाम आदीश्वरम् के अध्यक्ष श्री अमोलकचन्दजी कठ्रया, नगर भाजपाध्यक्ष श्री आलोकजी तिवारी आदि उपस्थित थे।

विधि-विधान के समस्त कार्य पण्डित सुरेन्द्रकुमारजी सलूम्बर द्वारा शुद्ध तेरापंथ आम्नायानुसार संपन्न कराये गये। जिसमें पण्डित सतीशजी पिपरई, पण्डित अंकितजी शास्त्री एवं पण्डित आकाशजी शास्त्री खनियांधाना का विशेष सहयोग रहा।

सभी कार्यक्रम तीर्थधाम आदीश्वरम् के संस्थापक न्यासी श्री अखिलजी बंसल के मार्गदर्शन में संपन्न हुये। कार्यक्रम में श्री जयेन्द्रजी जैन 'निप्पू' का विशेष सहयोग रहा। **– अंशुल जैन**

पार्श्वनाथ विधान संपन्न

जयुपर (राज.) : यहाँ अतिशय क्षेत्र चूलगिरि पर राज. लमेचू जैनसभा द्वारा नववर्ष स्नेह मिलन समारोह दिनांक 10 जनवरी को पार्श्वनाथ विधानपूर्वक आयोजित हुआ।

इस अवसर पर डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर द्वारा प्रवचन का लाभ मिला। कार्यक्रम में लगभग 300-350 साधर्मियों ने लाभ लिया। इस अवसर पर राज.लमेचू जैन सभा की परिवार परिचय पुस्तिका का विमोचन भी हुआ। विधि-विधान के कार्य डॉ. संजीवजी के निर्देशन में पण्डित रूपेन्द्रजी शास्त्री व पण्डित पंकजजी शास्त्री के सहयोग से संपन्न हुये।

वीतराग-विज्ञान के स्वामित्व का विवरण (फार्म 4 नियम नं. 8)

समाचार पत्र का नाम	:	वीतराग-विज्ञान (हिन्दी)
प्रकाशन स्थान	:	श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-4, बापूनगर, जयपुर-15 (राज.)
प्रकाशन अवधि	:	मासिक
प्रकाशक एवं मुद्रक	:	ब्र. यशपाल जैन (भारतीय) द्वारा पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट के लिये जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., एम.आई.रोड, जयपुर से मुद्रित एवं प्रकाशित।
सम्पादक का नाम	:	डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल (भारतीय) श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-4, बापूनगर, जयपुर -15 (राज.)
स्वामित्व	:	पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट, ए-4, बापूनगर, जयपुर -15

मैं ब्र. यशपाल जैन एतद् द्वारा घोषणा करता हूँ कि मेरी अधिकृत जानकारी एवं विश्वास के अनुसार ऊपर दिये गये विवरण सत्य हैं। – प्रकाशक : **ब्र. यशपाल जैन**

दिनांक 26-2-2016 ट्रस्टी, पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट, जयपुर

वार्षिकोत्सव सानन्द संपन्न

तीर्थधाम मंगलायतन-अलीगढ (उ.प्र.) : यहाँ दिनांक 3 से 7 फरवरी तक 13वें वार्षिकोत्सव का भव्य आयोजन श्री आदिनाथ पंचकल्याणक विधानपूर्वक किया गया।

इस अवसर पर गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के सी.डी. प्रवचनों के अतिरिक्त दोनों समय प्रथम प्रवचन पण्डित नीलेशजी जैन मुम्बई द्वारा समयसार की 15वीं गाथा पर एवं द्वितीय प्रवचन डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर द्वारा मोक्षमार्गप्रकाशक पर हुआ। दोपहर में पण्डित सचिनजी जैन द्वारा प्रवचन हुये।

विधान के आमंत्रणकर्त्ता स्वर्गीय श्रीमती मणीबेन शाह की स्मृति में उनके सुपुत्र श्री मनुभाई और स्वर्गीय श्रीमती प्रमोदकुमारी जैन की स्मृति में श्री विजयकुमारजी जैन परिवार कुरावली थे। कार्यक्रम का उद्घाटन श्री पी.के. जैन रुड़की द्वारा तथा ध्वजारोहण श्री आई.एस. जैन मुम्बई द्वारा किया गया। कार्यक्रम के अंतिम दिन भगवान आदिनाथ का निर्वाणकल्याणक महोत्सव आदिनाथ भगवान के मस्तकाभिषेक व विशेष पूजन सहित भक्तिभावपूर्वक मनाया गया।

विधि-विधान के समस्त कार्य पण्डित संजयजी शास्त्री मंगलायतन एवं मंगलार्थी विद्यार्थियों द्वारा संपन्न हुये।

क्यों लें महाविद्यालय में प्रवेश ?

1. श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धान्त महाविद्यालय का सन् 1977 से 38 वर्षों का गौरवशाली इतिहास है।
2. यहाँ पूर्णत: धार्मिक परिवेश मिलता है, जिससे बालक संस्कारशील धर्मनिष्ठ बन जाते हैं।
3. डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल, पण्डित रतनचन्दजी भारिल्ल, ब्र. यशपालजी जैन, पण्डित शान्तिकुमारजी पाटील, डॉ. संजीवकुमारजी गोधा, पण्डित पीयूषजी शास्त्री, पण्डित उदयजी शास्त्री, पण्डित गोमटेश्वरजी चौगुले, पण्डित ई.जिनकुमारजी शास्त्री, पण्डित अनिलजी शास्त्री, श्रीमती कमला भारिल्ल आदि अनेक विद्वानों के सान्निध्य में सतत् प्रशिक्षण से जैनतत्त्वज्ञान/दर्शन के प्रकाण्ड विद्वान बनते हैं।
4. पूरे देश में धार्मिक अवसरों पर प्रवचन/विधान आदि कार्यों के निमित्त भ्रमण के अवसर के साथ-साथ समाज के साथ रहने का प्रायोगिक ज्ञान सीखने को मिलता है।
5. जैनदर्शन के विद्वान होने से स्व के कल्याण के साथ-साथ अपने परिवार-समाज के कल्याण में निमित्त होते हैं।
6. छात्रावास में रहने से अपने हिताहित का स्वयं निर्णय करने की सामर्थ्य प्रगट होती है।
7. यहाँ विभिन्न प्रान्तों के छात्रों के साथ रहकर पूरी भारतीय संस्कृति का परिचय प्राप्त करने का अवसर मिलता है।
8. महाविद्यालय के छात्र औसतन प्रतिवर्ष राजस्थान बोर्ड तथा विश्वविद्यालय की परीक्षाओं में मैरिट में स्थान प्राप्त करते हैं।
9. संस्कृत भाषा में शास्त्री (बी.ए.) की डिग्री राजस्थान संस्कृत विश्वविद्यालय की होने से अपेक्षाकृत रोजगार के अधिक उन्नत अवसर उपलब्ध होते हैं।
10. दर्शन व संस्कृत विषय के साथ आई.ए.एस. जैसी राष्ट्रीय प्रतियोगी परीक्षा व आर.ए.एस. आदि प्रान्तीय प्रतियोगी परीक्षाओं में उत्तीर्णता के अवसर प्राप्त होते हैं।
11. छात्रों की वक्तृत्वशैली, तर्कशैली एवं अध्ययनशीलता का विशेष विकास होता है, जिससे छात्र अन्य क्षेत्रों में भी सफलता प्राप्त कर सकते हैं।

इसप्रकार श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धान्त महाविद्यालय में प्रवेश पाकर आपके बालक का सर्वांगीण विकास होता है। वह अपने और अपने परिवार, समाज की उन्नति में निमित्त होता है। जैनदर्शन का विद्वान बनकर स्व-पर कल्याण के सम्पादन हेतु अग्रसर होता है।

क्या आप नहीं चाहते कि आपका बालक भी ऐसा हो ? यदि हाँ.. तो महाविद्यालय में प्रवेश हेतु बालक को **दिनांक 15 मई से 1 जून 2016 तक विदिशा (म.प्र.)** में आयोजित शिक्षण-प्रशिक्षण शिविर में अवश्य भेजें। **पण्डित उदय शास्त्री (मो. 07611968465)**

फॉर्म मंगाने का पता : श्री टोडरमल दि. जैन सिद्धान्त महाविद्यालय, ए-4, बापूनगर, जयपुर-302015, फोन-0141-2705581, 2707458

तीर्थधाम ढाईद्वीप जिनायतन में कहान नगर में बन रहे फ्लेटों का दृश्य

R.N.I. No. 38278/83 Postal Regd. No. JaipurCity/421/2015-17

ढाईद्वीप जिनायतन में बन रही वेदियों का दृश्य (विशेष सहयोगदाता – रसिकलाल माणिकचंद धारीवाल, पूना)

सम्पादक :
डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल
शास्त्री, न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न, एम.ए., पीएच. डी.
सह-सम्पादक :
डॉ. संजीवकुमार गोधा
एम.ए.द्वय , नेट, एम. फिल (जैनदर्शन), पीएच.डी.
प्रकाशक एवं मुद्रक :
ब्र. यशपाल जैन, एम. ए.
द्वारा पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट के लिये
जयपुर प्रिंटर्स प्रा.लि., जयपुर से
मुद्रित एवं प्रकाशित।

If undelivered please return to -- **Pandit Todarmal Smarak Trust , A-4, Bapu Nagar, Jaipur - 302015**